



अंक:133

दक्षिण ध्वनि



दक्षिण रेलवे
मुख्यालय, राजभाषा संगठन, चेन्नै – 600 003.

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक – 23.03.2023



व्यक्तिगत नकद पुरस्कार – श्रीमती मनु शिवशंकर, वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर



हिंदी सप्ताह समारोह – अंतर विभागीय शील्ड



यांत्रिक विभाग



परिचालन विभाग



भंडार विभाग



दक्षिण ध्वनि

अंक: 133

(सर्वत्र गुंजायमान हो यह ध्वनि)



संरक्षक
आर.एन.सिंह
महाप्रबंधक



परामर्शदाता
गौतम दत्त
प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी



संपादक
डॉ.ए.श्रीनिवासन
राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय

सह-संपादक

श्रीमती एन.चित्रा, वरिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय
श्रीमती वी.सुजाता, वरिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय

अभिकल्प एवं प्रस्तुति

श्री एस.बालसुब्रमणियन, वरिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
इसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।
(केवल सरकारी प्रयोग के लिए)

संपर्क पता

राजभाषा संगठन, दक्षिण रेलवे मुख्यालय



भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway



आर.एन.सिंह
महाप्रबंधक

महाप्रबंधक कार्यालय
Office of the General Manager
चेन्नै/Chennai - 600 003.

संदेश

“दक्षिण ध्वनि” दक्षिण रेलवे की ध्वनि है। यह 133वाँ अंक है। कई विशेषांक भी निकाले जा चुके हैं। रेलकर्मि अपने काम के साथ-साथ साहित्य में भी रुचि रखते हैं तभी लगातार यह गृह पत्रिका प्रकाशित हो रही है।

आज का युग डिजिटल युग है। इस पत्रिका का प्रकाशन भी डिजिटली किया जा रहा है और गृह मंत्रालय की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जा रहा है जिससे भारत भर के केंद्र सरकार के कर्मचारी पढ़ सकते हैं।

दक्षिण रेलवे के हिंदी विभाग को इस अवसर पर साधुवाद देता हूँ। इस सिलसिले को बनाए रखें।

आशा है कि पाठकगण इस अंक का भी पूर्ण रसास्वादन करेंगे।

(आर.एन.सिंह)



भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway



प्रधान कार्यालय/ Headquarters Office
चेन्नै/Chennai - 600 003.

गौतम दत्त

**प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी**

संदेश

“दक्षिण ध्वनि” का प्रकाशन लगातार होना यह दर्शाता है कि यह काफी लोकप्रिय है। साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य प्रत्येक वर्तमान के मानव के मनोभावों को प्रतिबिंबित करता है।

केवल कार्यालयीन क्षेत्रों तक न रुककर राजभाषा को सर्वव्यापी होना चाहिए – इस उद्देश्य से ही केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय में गृह पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। दक्षिण रेलवे मुख्यालय में भी अपने कर्मचारियों को प्रेरित करते हुए हर छमाही में एक पत्रिका निकल रही है।

पाठक ही पत्रिका का मेरुदण्ड है। अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें ताकि हम पत्रिका में सुधार कर सकें। पाठक का विचार नामक एक स्तंभ अगले अंक से रखने का विचार दिया हूँ।

लगन और समर्पण भाव के साथ काम करनेवाले हिंदी विभाग के सभी कर्मचारियों को बधाइयां और आप सबको शुभकामनाएँ।

गौतम दत्त

(गौतम दत्त)



भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway



प्रधान कार्यालय/ Headquarters Office
चेन्नै/Chennai - 600 003.

डॉ.ए.श्रीनिवासन
राजभाषा अधिकारी,प्रधान कार्यालय
संपादकीय

सच्चा समाज सुधारक “साहित्यकार” ही है। विद्यालय में पढाए जा रहे सभी विषय भी एक प्रकार से साहित्य ही है। सकारात्मक विषयों को सही ढंग से पाठक के अंतरमन तक ले जाने में साहित्यकार सक्षम होते हैं। मनन करने के कारण ही शायद मानव नाम पड़ा है। यदि विषयों का आदान-प्रदान नहीं हुआ होता तो इतनी प्रगति संभव नहीं थी। जिस परिस्थिति में पले-बढ़े हैं उसी के मुताबिक चिंतन होता है। किसी के लिए जो अच्छा लगता है वह दूसरे के लिए बुरा भी लग सकता है तो अच्छे विषय, सकारात्मक विषय के रूप में किसे माने? एक ही कसौटी है – “सर्वभूत हिताय” – होना चाहिए।

मानव कहीं से भी प्रेरित हो सकता है। एक छोटा सा वाक्यांश, शब्द सारे जीवन को बदलने में सक्षम है। आज मुद्रण से बढ़कर मोबाइल एवं टैब में पढ़नेवाली युवा पीढ़ी अधिक है। यह पत्रिका भी डिजिटली सभी को प्रेषित की जाएगी, बेबसाइट पर भी अपलोड की जाएगी। दुनिया के किसी कोने में रहनेवाले, हिंदी जाननेवाले को यह प्रेरित कर सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए लेखक को अपना विचार व्यक्त करने का पूर्ण स्वतंत्र दिया गया है। “सार्वभौमिक” पक्ष को भी ध्यान में रखा गया है।

“ग” क्षेत्र में होते हुए हिंदी में रुचि रखनेवाले, साहित्य रचनेवाले कर्मचारियों, अधिकारियों को सौ-सौ सलाम। प्रत्येक बार अंक निकालते समय “पहली बार माँ” होनेवाली महिला जैसी अवस्था है। कैसे आएगा....कैसा होगा....सबको पसंद आएगा क्या? यह उद्वेग आपकी प्रतिक्रिया से ही कम होगा। कृपया अपनी-अपनी प्रतिक्रिया साझा कीजिए। इसीके लिए एक अलग स्तंभ अगले अंक से होगा।

पुनः मिलने की आशा में.....

आपका

(डॉ.ए.श्रीनिवासन)

विषय सूची

क्रम सं.	विषय	नाम श्री/सुश्री	पृष्ठ सं.
1	महिलाएं जो बनीं मिसाल	वैशाली गुप्ता	1
2	हे कविते (कविता)	वैशाली गुप्ता	2
3	भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर- इतिहास के एक बहुमुखी व्यक्तित्व का अनदेखा पक्ष	प्रेम चंद्र हरिजन	3
4	गलतफहमी	डॉ. ए.श्रीनिवासन	8
5	आरडीपीएमएस	नागमणि कुमार	10
6	उत्तराखंड	आर.इन्दुबाला	12
7	गुजरात की सैर	एम.गीता	14
8	मेरा बिहार	अश्विनी कुमार	15
9	मोबाइल के परे जीवन	वी.पूर्ण कामेश्वरी	16
10	समानता या अक्षीलता	रूपा मंडल	20
11	माँ	रजत प्रियदर्शी	23
12	मेरा पहला निबन्ध	वी. जयश्री	25
13	महात्मा बुद्ध: त्याग और समर्पण की प्रतिमूर्ति	धर्मराज मीणा	26
14	उसे इंसान कहते हैं (कविता)	धर्मवीर	28
15	ग्रीन वाशिंग	मनु शिवशंकर	29
16	कन्याकुमारी यात्रा के दौरान मेरे अनुभव	एस.माया देवी	30
17	खुदा	मोहन	33
18	रामायण से संबंधित कुछ रुचिकर तथ्य	एस.बालसुब्रमणियन	35
19	गोदान में चित्रित धनियाँ का चरित्र चित्रण	एन.चित्रा	38

हिंदी सप्ताह समापन समारोह



20.01.2023 – राजभाषा संगोष्ठी - संसदीय राजभाषा
समिति की निरीक्षण प्रश्नावली भरना



21 & 22.02.2023 - आशुलिपिकों, निजी सहायकों के लिए विशेष कार्यशाला



21.02.2023 - अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस





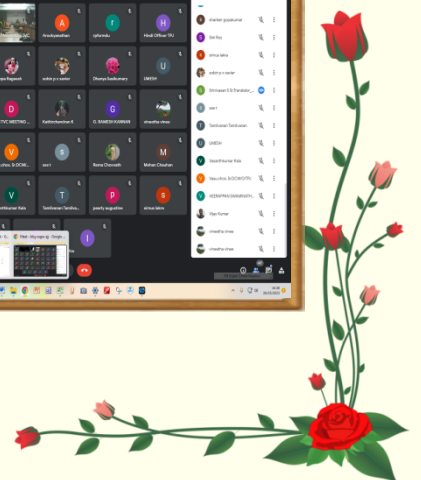
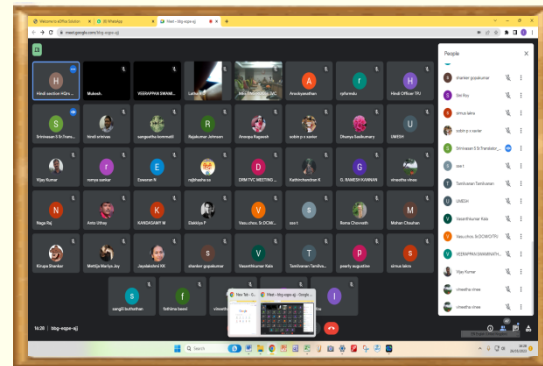
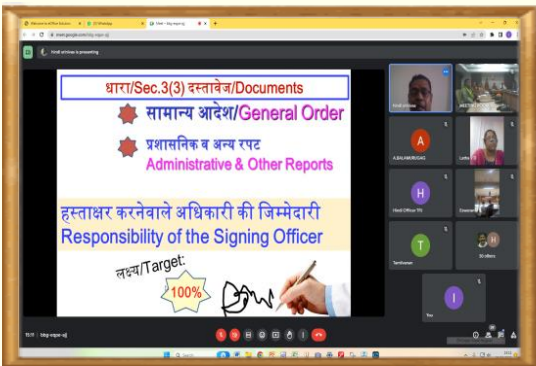
10.05.2023- समन्वय लिपिकों के लिए कार्यशाला



24.05.2023 - एचआरएमएस पर संगोष्ठी - एचआरएमएस



26.05.2023 ऑन-लाइन वेबिनार – एचआरएमएस



महिलाएं जो बनीं मिसाल

श्रीमती वैशाली गुप्ता

पत्नी श्री वी.के.गुप्ता

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, निर्माण, चेन्नै एंजुंबूर

सूरज उगते देखना उतना ही सुखकर लगता है, जितना समुद्र को ठाठें मारते देखना, क्योंकि समुद्र में उठती तेज लहरें, आवेगों का प्रतिनिधित्व करती हैं और इन्हीं आवेगों का पर्याय यदि महिलाओं में ढूँढ़ें तो वे भी उतनी ही तीव्र लगती हैं। गत वर्षों से महिलाओं ने क्रमिक रूप से जो उत्तरोत्तर प्रगति की है, उन पर गौर करना आवश्यक है।

वर्तमान समय में नारी का चित्र अपने प्राचीन चित्र के प्रतिकूल ही उभरकर सामने आया है। अधिकार व कर्तव्यों के प्रति सचेत महिलाएं ज्ञान संवर्धन के लिए जागरूक हैं। राजनीति, शिक्षा, व्यवसाय, वाणिज्य, तकनीकी, प्रशासन व अनन्य क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान निरंतर अपने प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है। अपनी पारंपरिक छवि से बाहर निकलकर महिलाओं ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। कॉर्पोरेट की दुनिया में कदम जमाती महिलायें, सुई से जहाज तक बनाने वाली कंपनियों के बोर्ड रूम में मीटिंग लेती महिलायें, बैंकों से लेकर होटल उद्योग के शीर्ष पदों से लेकर प्रबंधन की हर भूमिका की कसौटी पर उतरती महिलायें आज सभी जगह मौजूद हैं।

आज महिलाओं की भी पहुँच पुरुषों की तरह समुद्र की गहराई से लेकर आकाश की ऊँचाई तक है। बेमिसाल मेहनत से महिलाओं ने कामयाबी की मशाल को रोशन रखा है। विभिन्न क्षेत्रों की प्रमुख शख्सियतों की ओर गौर करें, जिन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। राजनीति में द्रौपदी मुर्मू, शीला दीक्षित, मायावती, वसुंधरा राजे, ममता बनर्जी, सुषमा स्वराज, रीता बहुगुणा जोशी आदि प्रभावशील शख्सियतें हैं। हमारे देश में महिला राष्ट्रपति, महिला लोकसभा स्पीकर, महिला पर्यावरणविद, महिला विदेश सचिव हैं जिन पर हमें गर्व है। राधिका प्लाकोट, शामी चक्रवर्ती, कमला हैरिस जैसी उल्लेखनीय प्रतिभायें हैं जिन्होंने विदेशों में भारतीय 'मूल' का दबदबा बनाये रखा। सिनेमा के क्षेत्र में देखें तो लता मंगेशकर, जया बच्चन, रेखा, शबाना आजमी, प्रियंका चोपड़ा, विद्या बालन आदि ने अपनी राह खुद प्रशस्त की है। पी.वी.सिंधु, सानिया मिर्जा, सानिया नेहवाल, दीपिका कुमारी, डोला बनर्जी, तेजस्विनी सावंत आदि अनगिनत महिलाएं खेल क्षेत्रों की उम्दा खिलाड़ी हैं।

आज महिलाएं पावरलेस व्हील नहीं, बल्कि पावरव्हील हैं। जैसे दुपहिया गाड़ी में पावर एक पहिये में होती है और दूसरा उसी के पावर से चलता है, कुछ ऐसी ही हालत आज की महिलाओं की भी है। कैरियर और परिवार में संतुलन रखती, यह आधुनिक महिलायें हैं जिन्होंने कई संवेदनशील मुद्दों से जुड़ी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया है और आगे भी कई शिखरों को छूने को तत्पर हैं।

विजनेस के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करने वाली महिलायें है – निरुपमा राय, सुनीता नारायण, संगीता तलवार, विनीता बाली, मल्लिका श्रीनिवास, मेहर पदमजी, ज्योति महेन्द्र आदि।

आने वाले समय में इन जैसे नामों की एक लंबी फेहरिस्त हो सकती है। बेशक इनके प्रयास और उपलब्धियां कई महिलाओं के लिए प्रेरणादायक हो सकती हैं।

सब कुछ आप पर ही निर्भर करता है। अगर आप खुद को लोगों के सामने असहाय सा पेश करेंगी, तो लोग आपके साथ वैसा ही बरताव करेंगे। अगर आप अपने लक्ष्य को पहचानती हैं और आपका काम अपने आप बोलता है, तो लोग लिंगभेद से ऊपर उठकर सोचने पर मजबूर हो जाते हैं

हे कविते

कविता के विभिन्न पड़ाव व अब उसकी क्या-क्या हो गई हैं। इस कविता के माध्यम से मैंने यही दर्शाने का प्रयत्न किया है।

अनुपम व्यक्तित्व की भार्या,
तुम वही हो न।

सिमटी – सिमटी सी
लाल जोड़े में।
चूड़ी की खनक को
हौले – हौले दबाती – सी
तुम वही हो न।

पर मैंने तो सुना,
तुमने खड़ग उठाया था
सोते से सभी को जगाया था
तुम वही हो न।

फिर सभ्यता और
जीवन निष्ठा ने क्या किया ?
मिलकर तुम्हें डराया
और सबकुछ छीनकर,
कोठियों के मध्य पहुँचाया।
तुम वही हो न।

कल जमीन से उठती नहीं थीं नजरें
आज आसमां के पार है।
कल घूँघट में थी दुनिया सारी
आज बाहों में सारा संसार है।



भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर - इतिहास के एक बहुमुखी व्यक्तित्व का अनदेखा पक्ष

प्रेम चंद्र हरिजन

उप मुख्य सिगनल व दूरसंचार

इंजीनियर/निर्माण कार्यालय

चेन्नै एलुंबूर, chandra.2k@gov.in

आधुनिक भारत के इतिहास में जब भी ऐसे महान विभूतियों की चर्चा होती है तो उनमें से एक नाम स्वतः उभर कर आता है वह है बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का जिन्हें संक्षेप में डॉ बी आर अंबेडकर या डॉ अंबेडकर के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में भारत देश का हर कोना डॉ अंबेडकर के नाम से परिचित है।

बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर भारतीय संविधान के शिल्पकार और आजाद भारत के पहले कानून मंत्री थे। भारतीय इतिहास में उन्हें एक बेहतरीन एवं दूरदर्शी न्यायविद, कानून विशेषज्ञ, अर्थशास्त्री, मानवाधिकार कार्यकर्ता, समाज सुधारक और राजनीतिक लीडर के रूप में जाना जाता है। वो अपने समय के एक मेधावी एवं उत्कृष्ट स्कॉलर भी थे। इतिहास में डॉ. अंबेडकर का योगदान राजनीति विज्ञान एवं अर्थशास्त्र के क्षेत्र में समकालीन उच्च कोटि के विद्वानों की श्रेणी में गिना जाता है। उनकी दूरदर्शी आधुनिक सोच, अथक प्रयास एवं योगदान की वजह से देश की बहुत बड़ी आबादी, खासकर मजदूर वर्ग, वंचित वर्ग एवं महिलाएं आज सिर्फ देश में ही नहीं बल्कि विश्व की राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक, प्रशासनिक एवं दार्शनिक रूप से विकास की मुख्यधारा से जुड़कर विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों में अपनी काबिलियत का उदाहरण स्थापित कर देश का सम्मान बढ़ा रहे हैं। राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान की स्वीकृति के रूप में, भारत सरकार ने उन्हें 1990 में भारत रत्न (posthumously) से सम्मानित किया है। डॉ. अंबेडकर के ऐतिहासिक योगदान की वजह से ही देश-विदेश में उन्हें आदर स्वरूप "बाबा साहब" के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

जीवन परिचय :

डॉ. अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को ब्रिटिश भारत के मध्य भारत प्रांत (अब मध्य प्रदेश) में स्थित महु नगर सैन्य छावनी में हुआ था। वे रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई की संतान थे। उनका परिवार कबीर पंथ को माननेवाला मराठी मूल का था और वे आंबडवे गाँव के निवासी थे जो कि वर्तमान में महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले में स्थित है।

शिक्षा और शैक्षिक उपलब्धियां

डॉ. अंबेडकर ने 1907 में अपनी मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और अगले वर्ष उन्होंने एलफिन्स्टन कॉलेज में प्रवेश लिया, जो बॉम्बे विश्वविद्यालय से संबद्धित था। 1912 में मुंबई विश्वविद्यालय से उन्होंने अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में ग्रेजुएशन की उपाधि हासिल की। छत्रपति साहूजी महाराज के शासन काल के दौरान बड़ौदा राज्य सरकार ने डॉ. अंबेडकर को बड़ौदा राज्य का रक्षामंत्री बनाया, लेकिन विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों द्वारा जातीय घृणित व्यवहार करने के कारण उन्हें जल्द ही यह नौकरी छोड़नी पड़ी। उन्हें उनकी प्रतिभा के लिए बड़ौदा राज्य छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया था जिससे उन्हें न्यूयॉर्क शहर में कोलंबिया विश्वविद्यालय में पोस्टग्रेजुएशन की डिग्री हासिल करने का मौका मिला। अपनी पढ़ाई आगे जारी रखने के लिए वे 1913 में अमेरिका चले गए।

सन 1913 में, 22 वर्ष की आयु में, अंबेडकर को बड़ौदा राज्य के सयाजीराव गायकवाड -III द्वारा कोलंबिया विश्वविद्यालय से पोस्ट-ग्रेजुएट उच्च शिक्षा हेतु स्थापित एक छात्रवृत्ति योजना के तहत तीन साल के लिए छात्रवृत्ति स्वीकृत की गई। कोलंबिया विश्वविद्यालय में उन्होंने जून 1915 में प्रमुख विषय अर्थशास्त्र के साथ समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शनशास्त्र और मानवविज्ञान (Anthropology) विषयों में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस दौरान उन्होंने 'Ancient Indian Commerce' पर एक थीसिस प्रस्तुत की। इसी दौरान डॉ. अंबेडकर ने विभिन्न विषयों पर अनेकों विद्वानों के लेख एवं किताबों का अध्ययन किया, जिनमें से प्रमुख रूप से जॉन डेवी और लोकतंत्र पर उनके काम ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। जहाँ उनके कई सहपाठी अभी भी अपने MA डिग्री को पूरा करने में संघर्षरत थे, वहीं डॉ अंबेडकर ने अगले साल अर्थात् 1916 में "National Dividend of India; A Historic and Analytical Study" विषय पर एक और थीसिस पूरी कर दूसरी MA की डिग्री हासिल की। 9 मई 1916 को उन्होंने मानवविज्ञानी Alexander Goldenweiser द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में "Castes in India: Their Mechanism, Genesis and Development" विषय पर एक पेपर प्रस्तुत किया। इस पेपर ने समाजशास्त्र अध्ययन के क्षेत्र में एक नए अध्याय को जन्म दिया, जो भारत की सामाजिक, राजनैतिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पहलू में मानवाधिकारों के साथ-साथ मानवीय मूल्यों की सोच को भी अंकुरित करने में अहम् साबित हुई।

कोलंबिया युनिवर्सिटी में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, आगे की पढ़ाई हेतु डॉ. अंबेडकर अक्टूबर, 1916 में लंदन आ गए जहाँ उन्होंने ग्रेजु-इन में 'बॉर' कोर्स के लिए एडमिशन लिया। साथ ही उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में भी एडमिशन लेकर डॉक्टरेट की थीसिस पर काम करना शुरू किया। बड़ौदा राज्य से मिलने वाली छात्रवृत्ति समाप्त होने पर अपनी आगे की पढ़ाई अधूरी छोड़कर जून 1917 में वे भारत लौट आए। बाकी पढ़ाई पूरी करने के लिए उन्हें चार साल के भीतर अपनी थीसिस जमा करने के लिए लंदन लौटने की अनुमति मिल गई थी। भारत आने के बाद उन्हें मुंबई के Sydenham College of Commerce and Economics में राजनैतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर की नौकरी मिल गई, जिसके दौरान उन्होंने अपनी आगे की बाकी पढ़ाई पूरी करने के लिए पैसे इकट्ठे किए। 1920 में एक बार फिर लंदन चले गए और 1921 में अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री पूरी की। उनकी एम.ए की थीसिस 'रुपये की समस्या, इसकी उत्पत्ति और इसका समाधान' विषय पर थी। सन् 1923 में उन्हें लंदन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में D.Sc. की उपाधि मिली और इसी वर्ष उन्हें ग्रेजु-इन द्वारा बैरिस्टर की उपाधि भी दी गई। 8 जून, 1927 को डॉ अंबेडकर ने कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की।

राष्ट्र निर्माण में डॉ अंबेडकर की भूमिका

बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के बारे में सामान्यतः लोग पूर्वाग्रह से सिर्फ वंचित वर्ग के मसीहा के रूप में ही देखते हैं। डॉ. अंबेडकर एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनके बारे में जनसामान्य के मस्तिष्क में भ्रांतियां ज्यादा हावी हैं। इस पूर्वाग्रह की वजह से देश के लोग, यहाँ तक कि अच्छे क्वालिफाइड लोग भी, उनकी दूरदर्शिता एवं व्यक्तित्व को न तो जानते हैं और न ही जानने का प्रयास करते हैं। इतना ही नहीं, जो लोग उनकी काबिलियत, क्वालिफिकेशन एवं स्टेट्समैनशिप से भलीभाँति परिचित होते हैं, वे भी जनसामान्य में फैली भ्रांतियों एवं अफवाहों से प्रभावित होकर डॉ अंबेडकर के प्रति धीरे-धीरे गलत एवं त्रुटिपूर्ण धारणा रखने लगते हैं।

वास्तव में बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर का राष्ट्र निर्माण में बहुत ही अद्वितीय योगदान है। डॉ. अंबेडकर प्रगतिशील विचारों वाले एक महान देशभक्त, सामाजिक चिंतक, राजनीतिक सुधारक, दार्शनिक लेखक थे। वे उन सभी राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के पक्षधर थे जो मानव की प्रगति और प्रसन्नता का कारण बने।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर अपने समय के अर्थशास्त्र के क्षेत्र में एक उच्च शिक्षित शख्सियत थे। राजनीति में प्रवेश करने से पहले सन् 1921 तक वे एक पेशेवर अर्थशास्त्री भी थे। उन्होंने अर्थशास्त्र पर तीन विद्वतापूर्ण पुस्तकें लिखीं: (i) Administration and Finance of the East India Company (ii) The Evolution of Provincial Finance in British India तथा (iii) The Problem of the Rupee , Its Origin and Its Solution। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा हिल्टन यंग कमीशन के समक्ष रखे गए प्रस्ताव के आधार पर भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की स्थापना की गई जो आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था को दिशा देने में अहम् भूमिका निभाता है।

उन्होंने न केवल एक राजनीतिक लोकतंत्र की परिकल्पना की बल्कि एक सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र बनाने के महत्व को भी रेखांकित किया। उनकी पीएचडी थीसिस से प्रेरित होकर ही भारत के वित्त आयोग की स्थापना की गई। अर्थशास्त्र के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गए कार्य आरबीआई अधिनियम, 1934 के दिशानिर्देश तैयार करने में बहुत मददगार साबित हुए।

बाबा साहब हमारे देश में रोजगार कार्यालयों के संस्थापकों में से एक थे, जो देश की अर्थव्यवस्था और रोजगार को एक व्यवस्थित तरीके से इंटिग्रेट कर आजादी के बाद उत्पन्न विषम परिस्थितियों में संजीवनी साबित हुई। बाबा साहब ने नेशनल पावर ग्रिड सिस्टम, केंद्रीय जल सिंचाई, नेविगेशन कमीशन, दामोदर घाटी परियोजना, हीराकुंड बांध परियोजना और सोन नदी परियोजना की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जहाँ विद्युत उत्पादन परियोजनाओं से देश में उद्योग एवं नौकरियों का सृजन हुआ, वहीं सिंचाई हेतु आवश्यक जल उपलब्ध होने से कृषि क्षेत्र में पैदावार बढ़ने से भुखमरी आदि समस्याओं का निराकरण करने में मदद मिली।

डॉ. अंबेडकर ने 1942 से 1946 तक ब्रिटिश वायसराय की कार्यकारी परिषद में सेवा की और श्रम विभाग के प्रभारी भी रहे। इसके बाद उन्होंने श्रम मंत्री के रूप में भी कार्य किया। स्वतंत्र भारत की पहली सरकार में उन्होंने कानून मंत्री के रूप में कार्य किया। इन सभी पदों पर कार्य करते हुए उन्होंने श्रम कानून और भारतीय मजदूरों/श्रमिकों की बेहतरी में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के श्रम सदस्य के रूप में कार्यकाल के दौरान The Indian Factories Act, 1881 में तीन बार संशोधन किया गया था जिनमें से दो महत्वपूर्ण थे। अप्रैल 1944 में उन्होंने लगातार चलने वाले कारखानों में कार्यरत श्रमिकों के लिए वेतन के साथ छुट्टियों का प्रस्ताव करते हुए एक बिल पेश किया। दूसरा संशोधन, 4 अप्रैल, 1946 को पारित किया गया जिसमें मजदूरों के लिए दैनिक और साप्ताहिक ज्यूटी के घंटों को सीमित किया गया। परिणामस्वरूप, आज सभी श्रेणियों के मजदूरों के लिए एक दिन के साप्ताहिक अवकाश का प्रावधान है और प्रतिदिन ज्यूटी के घंटे पहले की तुलना में 12 घंटे या उससे अधिक से घटाकर केवल 8 घंटे कर दिए गए। इस तरह श्रमिक वर्ग सिर्फ फैक्ट्रियों की मशीनों एवं टाइम-टेबल का हिलता डुलता पुर्जा (Cog-in-the-Wheel) होने के बजाय शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ एवं सुदृढ़ होते हुए ऐसी इकाइयों (entities) का एक अहम हिस्सा बन गया जिसे हम आधुनिक प्रबंधन की भाषा में मानव पूंजी (human capital) या मानव संपत्ति (human asset) या मानव संसाधन (human resource) की संज्ञा देते हैं।

श्रम सदस्य के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान डॉ. अंबेडकर ने श्रम कल्याण कोष की स्थापना के लिए कानून भी बनाया। इस पैसे का उपयोग श्रमिकों और उनके परिवारों के कल्याण के लिए किया जाता था। इसके अतिरिक्त, इन निधियों का उपयोग मुख्य रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं और श्रमिकों को आवास प्रदान करने जैसे क्षेत्रों में किया जाता है। भारतीय कामगारों के लिए पीपीएफ, बोनस और भते जैसी योजनाएं डॉ. अंबेडकर की आर्थिक नीति एवं दूरदर्शिता की उपज हैं।

इसके अलावा, डॉ. अंबेडकर ने 1946 में विधानसभा में एक नया विधेयक पेश किया जिसमें श्रमिकों को न्यूनतम मजदूरी (Minimum Wages) की व्यवस्था की गई। निर्धारित न्यूनतम मजदूरी से कम मजदूरी देना अवैध कर दिया गया और इस न्यूनतम वेतन को हर पांच साल में संशोधित करने का भी प्रावधान किया गया था। बाद में फैक्ट्री अधिनियम में पुनः संशोधन प्रस्तावित करके वयस्क श्रमिकों को 10 दिनों की संवैधानिक छुट्टी और बाल श्रमिकों के लिए 14 दिनों की संवैधानिक छुट्टी की व्यवस्था की।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के काम में महिला सशक्तिकरण (Women Empowerment) हमेशा एक केंद्रीय विचार रहा है। उनका मानना था कि राष्ट्र के विकास में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है और महिलाओं का विकास ही देश की क्षमता तय करेगा। इस संबंध में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने कहा था कि "मैं किसी समुदाय की प्रगति को उस समाज में महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति से मापता हूँ।" डॉ. अम्बेडकर ने गर्भवती महिलाओं को लाभ प्रदान करने और उन्हें प्रसव के दौरान और बच्चे की देखभाल के शुरुआती दिनों में आराम करने की अनुमति देने के लिए Mines Maternity Benefit Act, 1941 में दो महत्वपूर्ण संशोधन लागू करवाया, जिसके अनुसार मातृत्व अवकाश के लिए लाभ की अवधि को बढ़ाकर 16 सप्ताह कर दिया गया जिसे दो भागों में विभाजित किया जा सकता था ताकि एक महिला कर्मचारी प्रसव से पहले 10 सप्ताह और प्रसव के बाद 6 सप्ताह की छुट्टी ले सके। इस मातृत्व अवकाश अवधि के दौरान पूर्ण वेतन प्राप्त करने के प्रावधान भी किए गए थे और इसका भुगतान पूरी तरह से नियोक्ता द्वारा किया जाना अनिवार्य किया गया। इसके साथ में यह भी प्रावधान किया कि किसी भी महिला को उसकी गर्भावस्था के दौरान नौकरी से नहीं निकाला जा सकता है।

डॉ. अम्बेडकर ने सहकारी और सामूहिक खेती के साथ-साथ उपलब्ध जमीन का राष्ट्रीयकरण कर भूमि पर राज्य का स्वामित्व स्थापित करने और सार्वजनिक प्राथमिक उद्यमों और बैंकिंग, बीमा आदि उपक्रमों को राज्य नियंत्रण में रखने की पुरजोर सिफारिश की और छोटी जोत के किसानों (small holding farmers) पर निर्भर बेरोजगार श्रमिकों को रोजगार के ज्यादा से ज्यादा अवसर प्रदान करने के लिए उन्होंने औद्योगीकरण के लिए भी काफी काम किया था। इसके अतिरिक्त डॉ. अम्बेडकर ने कम आय वाले समूहों के लिए आयकर का विरोध किया जिससे आज भी टैक्स कानून में कम आय के नागरिकों को जीरो टैक्स स्लैब की कैटेगरी में देखा जा सकता है। उन्होंने अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए भूमि राजस्व कर और उत्पाद शुल्क नीतियों में योगदान दिया। उन्होंने भूमि सुधार और राज्य के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. अम्बेडकर साउथबोरो कमीशन के सामने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (Universal Adult Franchisee) की वकालत करने वाले पहले भारतीय थे जिसकी वजह से आज सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के सभी गणतान्त्रिक देशों में वहां के नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के वोट देने का अधिकार प्राप्त है।

निष्कर्ष

डॉक्टर अंबेडकर भारतीय इतिहास का एक गौरव हैं जिन्होंने सिर्फ वंचित वर्ग के उत्थान के लिए ही कार्य नहीं किया, बल्कि सभी भारतीयों के हित में महत्वपूर्ण कार्य किया। समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, दर्शन, मानवाधिकार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के अलावा मजदूर वर्ग, महिला वर्ग

एवं किसानों के उत्थान हेतु अभूतपूर्व योगदान दिया जो विश्व स्तर पर आज भी प्रशंसनीय है। उन्होंने देश के विकास हेतु कृषि एवं उद्योग विकास के क्षेत्र में भी अनेक परियोजनाओं की संकल्पना की और राष्ट्रहित में उन्हें निष्पादित करवाया। उनके मौलिक योगदान की सराहना में नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर अमर्त्य सेन, जो कि प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार पाने वाले छठे भारतीय हैं, ने 2007 में अपने एक व्याख्यान के दौरान कहा कि अर्थशास्त्र के क्षेत्र में डॉ. अंबेडकर मेरे पिता हैं। "The Makers of the Universe" नामक वैश्विक सर्वेक्षण के आधार पर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा पिछले 10,000 वर्षों के शीर्ष 100 मानवतावादी लोगों की एक सूची बनाई गई जिसमें चौथा नाम डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर का है। कोलंबिया यूनिवर्सिटी ने 2004 में दुनिया के टॉप 100 स्कॉलर्स की लिस्ट बनाई और उस लिस्ट में सबसे पहला नाम डॉ. भीमराव अंबेडकर का था। यह हमारे लिए गर्व का विषय है.



अध्यापक- जल के लिए रसायनिक फार्मुला क्या है?

छात्र - एच, आई, जे,के एल, एम, एन, ओ

अध्यापक- क्या बक रहे हो?

छात्र - आपने ही कहा था एच टु ओ

साक्षात्कार वाला- उल्टे शब्द बोलो

बेरोजगार युवक - ठीक है सर

साक्षात्कार वाला- भारत में बना

बेरोजगार युवक - पाकिस्तान में नष्ट किया हुआ

साक्षात्कार वाला- अच्छा

बेरोजगार युवक -बुरा

साक्षात्कार वाला-ठीक है ,ठीक है, अपना सीट लो

बेरोजगार युवक -ठीक नहीं है, ठीक नहीं है, मेरा सीट दो

साक्षात्कार वाला-बाहर जाओ, तू बेवकूफ

मैनेजर- हमारे बैंक मे बिना इन्ट्रस्ट ऋण देते हैं

बेरोजगार युवक - आप दे तो रहे है क्यों नहीं इन्ट्रस्ट सहित देते ।

गलतफहमी

डॉ ए. श्रीनिवासन

राजभाषा अधिकारी, दक्षिण रेलवे मुख्यालय

रामस्वरूप एक प्राइवेट कंपनी में काम करता है। मैनेजर है। प्रति महीने लगभग लाख रुपए कमाता है। उसकी पत्नी रमा है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक बेटा और एक बेटी दोनों अच्छी तरह पढ़ते थे। खेलकूद में भी अब्बल थे। दोनों सुखमय जीवन बिता रहे थे और आदर्श दम्पति के रूप में नजर आते थे।

ऑफिस के प्रतिदिन की घटनाओं को रामस्वरूप रोज रात में अपनी पत्नी से बोल देता था और वैसे ही पत्नी भी सुबह से शाम तक उन्होंने क्या-क्या किया, सब कुछ बोल देती थी। दोनों बहुत ही मिलनसार थे। दूसरों पर दया दिखाते थे। इसलिए जीवन सुखमय था।

सभी दिन एक सा नहीं रहता। रमा, बाजार में बच्चों के लिए खिलौने खरीदने गई थी। बड़ी दूकान थी। एक-एक करके सभी सेक्शन में जा रही थी। एक सेक्शन में जब मोल-भाव कर रही थी तभी पहचान पायी कि वह सेल्स गर्ल उसकी सहपाठी यामिनी है जो बहुत वर्षों के बाद मिली है। दोनों स्कूल के दिनों में बहुत ही घनिष्ठ मित्र थीं। दोनों बहुत सारी बातें करना चाहती थीं। यामिनी भी उन्हें बहुत चाहती थी, पर परिस्थिति एवं हैसियत की वजह से वह चुप रही क्योंकि वह सामान्य सेल्स गर्ल थी जबकि रमा धनवान सी दिख रही थी। जब सहपाठी थी तब तो ऐसा नहीं था। वह सोच रही थी कि शायद पति अच्छे उद्योग में होगा, धनवान होगा और इसीलिए धनवती हुई होगी। यामिनी सोच ही रही थी कि रमा ने अनुरोध किया - आधे दिन की छुट्टी लेकर मेरे साथ घर आओ ताकि आराम से बैठकर इतने सारे वर्षों की बातें कर सके। यामिनी से रहा न गया, वह भी छुट्टी लेकर रमा के साथ उसका घर चली गयी।

वह तो घर नहीं आलीशान महल था। राजा महाराजाओं के महल जैसे दिखता था। नौकर चाकर थे। कुत्ते थे। पर सब अपनी-अपनी सीमाएं जानते थे। रमा के आते ही सभी ने प्रणाम किया। रमा, अपने शयन कक्ष तक यामिनी को ले गयी। नौकरानी से चाय बनवाने के लिए कहा। आराम से बिस्तर पर लेट गई और यामिनी को भी बिठायी। दोनों स्कूल के दिनों की घटनाओं को शेयर करने लगे। बहुत ही स्पृहणीय याद थीं। अपने पुराने अध्यापक, अध्यापिकाओं, सहपाठियों, खेलकूद के दिन, शिक्षा यात्राओं की घटनाओं, उन दिनों की प्रतियोगिताओं आदि के बारे में बातें करती हुई दोनों आनन्द विभोर हो उठीं।

धीरे-धीरे बात व्यक्तिगत जीवन तक आई। रमा अपने आपको धन्य मानती थी कि रामस्वरूप जैसे पति मिला है। यामिनी भी अपने को कम दिखाना नहीं चाहती थी, पर उसकी स्थिति दयनीय थी। पति एक प्राइवेट कंपनी में मामूली नौकरी करता है। आय बहुत कम है। दो बच्चे हैं। इसलिए तो वह भी काम के लिए आई है। पर उसको भी ज्यादा नहीं मिलता था। दोनों की आमदनी से जैसे-तैसे जिन्दगी बिता रहे थे। इस हफ्ते ही लड़कों के स्कूल फीस भरने की अंतिम तारीख है। दस हजार रुपए भरना है। पति ने ऑफिस में अग्रिम के लिए आवेदन दिया है। आगे पीछे होने पर भी उम्मीद है कि मिल जाएगा। पर यदि इस हफ्ते तक नहीं भरती है तो बच्चों के नाम को नोटीस बोर्ड में डाल दिया जाएगा जो बच्चों के लिए बहुत ही अपमानजनक बात होगी। यही सोच यामिनी के दिमाग में चल रही थी। वैसे, एक हफ्ते से ही वह बहुत परेशान थी। पर अब रमा से मिलने के बाद, उसकी हैसियत देखने के बाद लगा कि क्यों न रमा से पैसे लेकर पहले फीस भरा दें और बाद में पैसे मिलते ही उन्हें लौटा दें। बहुत हिचकिचाहट के साथ अपनी स्थिति रमा को बतायी और मदद करने के लिए मित्रत की।

अब रमा सोचने लगी। बहुत सारी बातें उसके मन में दौड़ रही थीं। फिर भी देने का निर्णय लेकर बोली कि पति से एक बार पूछकर पैसे देगी। वह जानती थी कि पति से पूछने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह बड़ी रकम नहीं है। बड़ी रकम देने पर भी पति उन्हें कुछ नहीं कहते। दान-धर्म के लिए देने पर भी कुछ नहीं बोलते थे, नहीं रोकते थे। ऊपर से सहेली के लिए देने पर ज़रूर एतराज नहीं करेंगे। ये सब रमा को मालूम था, फिर भी भारतीय संस्कृति की रक्षा एवं सहेली के सामने पति का आदर बढ़ाने के लिए उसने ऐसा कहा था। वैसे हमेशा पति के साथ फोन पर लाउडस्पीकर डालकर ही बातें करती थी। इस बार भी ऐसा ही करना चाहती थी। पर अचानक मन बदलकर लाउडस्पीकर बंद कर सामान्य रूप में बात करने लगी। जब उसने औपचारिक तौर पर बातें कहीं तो अपेक्षा के विपरीत उसके पति ने कहा कि नहीं - नहीं, कुछ नहीं दो। दस हजार छोटी रकम थोड़ी ही है। हमें भी इस महीने पैसों की ज़रूरत पड़ सकती है। इसलिए बोल देना कि नहीं दी जा सकती है। इसे सुनते ही रमा का मुख विकृत हो गया। पीला पड़ गया। पर तुरन्त मन मसोसकर यामिनी से कहा कि उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। मेरी सहपाठी बताने पर और भी खुश हो गए। चलो, तुम पैसे लेते जाओ, जब तुम्हारे पति को मिल जाएगा तब लौटा देना।

उसे विदा देकर वापस आई थी। मन बहुत भारी था। बार-बार सोचने लगी कि यदि हमेशा की तरह मैं लाउडस्पीकर में बात करती तो क्या हुआ होता? दस हजार तो बहुत ही छोटी रकम है। क्यों पति ने ऐसा कहा? किसी भी काम में वह लग न पायी। बार-बार पति की बातें कानों में गूँजती रहीं। शाम हुई। रमा बहुत ही उतावली होती गई। बेचैनी उसे खा रही थी। सात बजे के आसपास पति घर आए। हाथ-मुँह धोते ही रमा उन पर टूट पड़ी। वह जानना चाहती थी कि क्यों पतिदेव ने दस हजार रुपए देने से इनकार किया। पूछते-पूछते रोने की स्थिति पर आ गई। पति रामस्वरूप ने साफ स्वर में कहा- तुम तो हमेशा मुझसे लाउडस्पीकर में ही बात किया करती थी। तुमने ही बताया कि उनसे बहुत दिनों के बाद मिली हो। इतने दिनों के बाद मिलते ही वह तुमसे पैसा माँग बैठी है। मैंने सोचा कि तुम देना नहीं चाहती हो। लेकिन तुम्हारी सहपाठी होने के कारण तुम उनसे सीधे बोलने में हिचकती हो इसलिए मुझसे कहलवाना चाहती हो। इसलिए तुम्हारे मनोभाव के मुताबिक मैंने बार-बार न देने को कहा ताकि तुम्हारी सहपाठी सुनें और तुम निर्दोषी रहो। नहीं तो मुझे फोन करने की ज़रूरत ही नहीं थी तुम्हें, तुम खुद ही दे सकती थी। मुझसे बाद में भी कहने की ज़रूरत नहीं थी। अब भी रमा रोयी लेकिन ये खुशी के आँसू हैं।



आँसू तेरे नकलें तो आँखें मेरी हो
दिल तेरा धड़के, धड़कन मेरी हो
खुदा करे अपनी दोस्ती इतनी गहरी हो कि व्यापार तू करे आय मेरी हो

दोस्त- अरे मेरे यार मेरी शादी है यार
अगले महीने जरूर आ जाना है यार
दोस्त- अरे दोस्ती की परिभाषा ही कठिनाई में साथ देना,
क्यों न मैं आऊँ, जरूर आ जाऊँगा

आरडीपीएमएस

नागमणि कुमार

कनिष्ठ इंजीनियर/ सिगनल, सिगनल विभाग, मुख्यालय

आरडीपीएमएस का परिचय

नागरिकों के लिए बेहतर भविष्य बनाने और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग करने के लिए तथा माननीय प्रधानमंत्री के विचारों को साकार बनाने के लिए, भारतीय रेलवे ने सिगनलिंग गियर के रखरखाव पर भार कम करने और शेड्यूल आधारित रखरखाव व्यवस्था से पूर्वानुमान आधारित रखरखाव व्यवस्था में परिवर्तित होने का निर्णय लिया। इसके अनुरूप, स्टेशनों पर रिमोट डायग्नोस्टिक एंड प्रेडिक्टिव मेंटेनेन्स सिस्टम (RDPMS) तकनीक का इस्तेमाल करने का निर्णय लिया गया है।

आरडीपीएमएस का मुख्य उद्देश्य सिगनलिंग रखरखाव टीम को अग्रिम रूप से उचित रखरखाव कार्रवाई करने में सहायता करके सिगनलिंग गियर की विफलता को रोकना है। सिगनलिंग उपकरण से सभी रियल टाइम डेटा सेंसर के माध्यम से एकत्र किए जाते हैं जो सिस्टम की समग्र विश्वसनीयता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। RDPMS के कारण स्टेशन में स्थापित विभिन्न उपकरण की स्थिति देखी जा सकती है और उसकी निगरानी की जा सकती है, रखरखाव और भविष्यवाणी करना भी आसान हो सकता है। एआई आधारित आरडीपीएमएस, उत्पादकता बढ़ाने और रखरखाव के समय और लागत को कम करने के लिए भविष्य में होनेवाली सभी विफलताओं के प्रति अलर्ट भी प्रदान करेगी। इससे सुरक्षित और समयनिष्ठ गाड़ी परिचालन संभव होगा।

सिगनलिंग उपकरण रखरखाव में चुनौतियां

- सभी प्रकार के मौसमों के संपर्क में आनेवाली परिसंपत्तियां
- महंगे और श्रेष्ठ तकनीकी उपकरण , तापमान, धूल, वोल्टेज में बढ़ोत्तरी आदि से प्रभावित होते हैं।
- नए तकनीकों का तेजी से परिचय हो रहा है।
- बहु-विभागीय वातावरण में काम करना पड़ता है।
- परिसंपत्तियों के रखरखाव कार्य में लगे कर्मचारी कम कुशल हैं।

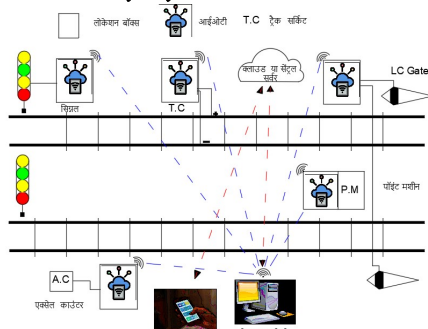
आरडीपीएमएस तकनीक के फायदे

- एमटीटीआर(फेलियर के रिपेयर करने का औसत समय) को कम करता है और विफलता की घटनाओं की गहराई तक की जानकारी प्रदान करके सिगनलिंग सिस्टम के सही उपयोग को सुनिश्चित करता है।
- एमटीबीएफ(दो फेलियर के बीच का औसत समय)बढ़ाना- और भविष्य की विफलताओं के बारे में पहले ही सूचना देता है जैसे बैटरी खतम हो जाने या सिगनल गियरों को बदलने आदि और हेल्थ रिपोर्ट के आधार पर सिस्टम की अच्छी जानकारी लेने में मदद करता है।
- रखरखाव गतिविधियों में कुशल कर्मचारियों की निर्भरता को कम करता है।
- ओईएम (ओरिजिनल इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरर) के साथ सहयोगात्मक कार्य करने में मदद करता है।
- रखरखाव के प्रयासों को कम करता है।
- डेटा आधारित निर्णय लेने में सक्षम बनाता है।

आरडीपीएमएस की कार्यप्रणाली

1. सिग्नलिंग उपकरण से डेटासेंसर/आईओटी उपकरणों के माध्यम से रीयल टाइम विवरण प्राप्त किया जा सकता है
2. प्रथम स्तर की विफलता की जानकारी के लिए स्थानीय सर्वर
3. स्थानीय सर्वर से डेटा केंद्रीकृत क्लाउड/ सर्वर को भेजना
4. रिमोट मॉनिटरिंग: वेबऐप/मोबाइल ऐप

आरडीपीएमएस सिस्टम की बनावट



प्रणाली में निम्नलिखित मॉड्यूल शामिल हैं

1. सिगनलिंग उपकरणों के पैरामीटर के लिए डाटा कलेक्शन उपकरण के सेंसर और इन बिल्ड डायग्नोस्टिक पोर्ट
2. स्टेशन पर स्थानीय सर्वर के लिए इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) उपकरणों का उपयोग कर साइट से रॉ डेटा की प्रस्तुति
3. स्थानीय सर्वर एंड कंप्यूटिंग डिवाइस की मदद से रियल टाइम डेटा के आधार पर प्रथम स्तर की गलती और नैदानिक जानकारी उत्पन्न करता है
4. हर स्टेशन के स्थानीय सर्वर से डाटा, केंद्रीकृत क्लाउड को भेजा जाएगा। इस डेटा को पहले के डेटा और रूझानों के साथ विश्लेषण किया जाएगा। डेटा एनालिटिक्स (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस /मशीन लर्निंग) के माध्यम से उन्नत कंप्यूटिंग का उपयोग करके किसी भी समस्या या विफलता के होने से पहले उसका अनुमान लगाने के लिए इसका उपयोग किया जायेगा।
5. रिमोट मॉनिटरिंग: एक स्वचालित अलर्ट तंत्र जो संबंधित मंडल और संबंधित रखरखाव कर्मचारियों के सिगनल नियंत्रण एसएमएस/मोबाइल ऐप पर सूचना भेजेगा।
6. प्रिडिक्टिव मेंटेनेंस :एक मोबाइल ऐप भी विकसित किया जायेगा जो कि प्रत्येक स्टेशन गियर पर रीयलटाइम अपडेट प्रदान करेगा जो मेंटेनेंस कर्मचारियों को हैंडहेल्ड उपकरण में दिया जाएगा जहां ज्यूटी प्रारंभ करते समय वह देख सकता है कि किन गियर्स पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

दक्षिण रेलवे में आरडीपीएमएस तकनीक का उपयोग

आरडीएसओ और रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार दक्षिण रेलवे के सिगनल और दूरसंचार विभाग ने वर्क्स प्रोग्राम 2023-24 के तहत 132 स्टेशनों (प्रत्येक मंडल में 22 स्टेशन) पर लगभग 71 करोड़ रुपये की लागत पर आरडीपीएमएस तकनीक इन्स्टॉल करने का प्रस्ताव रखा है। इस तकनीक को क्रियान्वित करने के बाद, यह उम्मीद की जाती है कि सिगनल विफलता की घटनाओं में भारी कमी आएगी और वार्षिक रखरखाव पर होने वाली लागत और समय की भी काफी बचत होगी।

उत्तराखंड

आर. इन्दुबाला

आशुलिपिक ग्रेड -I, बिजली विभाग, मुख्यालय

हिमालय पहाड़ियों के अंचल में फैला हुआ उत्तराखंड राज्य अपने गगन चुम्बी हिम शिखरों, पवित्र तीर्थस्थलों और मनोरम बागों के कारण प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रहा है। उत्तराखंड नवंबर 2000 से नया राज्य बना। पहले यह उत्तर प्रदेश का एक मंडलीय भाग था। 09 नवंबर 2000 को भारत के सत्ताइसवें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया।

उत्तराखंड का नामकरण और संक्षिप्त पौराणिक परिचय:

पौराणिक काल में उत्तराखंड को क्षेत्रीय स्थिति के अनुसार हिमवतखंड या मानसखंड और केदार खंड के नाम से जाना जाता था। हिमवत खंड का मध्यवर्ती क्षेत्र कुमाऊं को मानसखंड कहते थे जिसमें मानसरोवर – कैलाश स्थित हैं। इसके अलावा हिमवत खंड के पश्चिमी क्षेत्र (गढ़वाल) में बद्री- केदार आदि स्थित हैं। इस क्षेत्र को केदारखंड का नाम दिया गया था। उत्तरमध्यकालीन पुराण " स्कंदपुराण " के अनुसार उसके चार प्रमुख भाग हैं यथा - हिमाद्रि खंड, मानसखंड, कैलाशखण्ड, केदारखंड। कालान्तर में इस सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रजातीय आधिपत्य के आधार पर पहले किरातमंडल और बाद में खसमण्डल नाम दे दिया गया।

उत्तराखंड के नामकरण पर आधारित पौराणिक कथा:

उत्तराखंड के नामकरण के विषय में एक पौराणिक कहानी है। माना जाता है कि उत्तराखंड का नामकरण महाभारत काल से जुड़ा है। तदनुसार राजा विराट की राजधानी वैराट थी। राजा विराट के द्वारा अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के साथ किया गया और उन्होंने अपनी पुत्री उत्तरा को हिमालय का यह राज्य दहेज में दे दिया। उत्तरा का स्त्रीधन माने जाने के कारण इस क्षेत्र का नाम उत्तराखंड पड़ गया।

उत्तरांचल से उत्तराखंड के रूप में नाम परिवर्तन और राज्य प्रतीक :

09 नवंबर 2000 को जब इस राज्य का गठन हुआ था तब इस राज्य का नाम उत्तरांचल रखा गया। लेकिन बाद में 1 जनवरी 2007 को जनता की मांग और इसके पौराणिक इतिहास के आधार पर इसका नाम उत्तराखंड रख दिया गया।

उत्तराखंड राज्य के प्रतीक हैं – कस्तूरी मृग- उत्तराखंड का राज्य पशु, मोनाल -राज्य पक्षी , बुरांश- रा वृक्ष, ब्रह्मकमल- राजकीय फूल घोषित किया गया है।

उत्तराखंड की भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार :

इसके पूर्व में नेपाल, उत्तर में हिमालय पार तिब्बत (चीन) , पश्चिम में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में उत्तरप्रदेश स्थित हैं। उत्तराखंड में कुल 13 जिले हैं। इनमें से सात जिले गढ़वाल मंडल और छह जिले

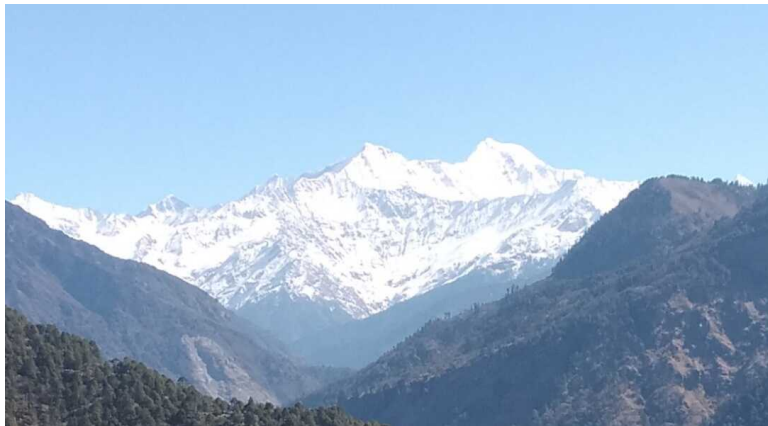
कुमाऊं मंडल में स्थित हैं। उत्तराखंड का क्षेत्रफल 53,483 वर्ग किलोमीटर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तराखंड का देश में 19वां स्थान है।

भाषा, धर्म व संस्कृति :

उत्तराखंड में हिंदी के साथ कुमांउनी ,गढ़वाली ,जौनसारी भाषाएं मुख्यतः बोली जाती हैं। उत्तराखंड की राजभाषा हिंदी है और दूसरी राजभाषा संस्कृत है। उत्तराखंड में मुख्यतः कुमांउनी, गढ़वाली और जौनसारी संस्कृतियों का अनुपालन किया जाता है। उत्तराखंड एक पर्वतीय राज्य है। इसे देवभूमि भी कहा जाता है क्योंकि यहां पर हिंदू धर्म के कई महत्वपूर्ण मंदिर हैं।

उत्तराखंड की अस्थाई और शीतकालीन राजधानी देहरादून है। और गैरसैण उत्तराखंड की ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित की गई है। उत्तराखंड का उच्च न्यायालय नैनीताल में स्थित है। चार धाम यात्रा और पर्यटन उत्तराखंड की आय का प्रमुख श्रोत है।

विश्व प्रसिद्ध जिम कॉर्बेट पार्क, नैनीताल, देहरादून, चमोली के नंद देवी नेशनल पार्क, हरिद्वार, बद्रीनाथ, केदारनाथ आदि यहां के प्रसिद्ध स्थल हैं। हिंदू धर्म की पवित्र नदियां गंगा तथा यमुना का उद्भव भी यहीं से होता है। यह अत्यन्त रमणीय राज्य है जो हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए पावन भी है।



गुजरात की सैर

एम.गीता

मुख्य वाणिज्य लिपिक, वाणिज्य विभाग, मुख्यालय



मैं बचपन से ही सैर करने में इच्छा रखती थी। हमेशा कहीं न कहीं जाने का प्लान करती थी और उसे पूरा भी करती थी। शादी के बाद भी मेरी यह तमन्ना पूरी होती थी क्योंकि मेरे परिवार वाले भी घूमने-फिरने के शौकीन निकले और ऊपर से पतिदेव



भी रेलवे में नौकरी करते हैं तो हम योजना बनाकर कई जगह गए हैं। इसी सिलसिला को बरकरार रखते हुए मैं ने फरवरी 2023 महीने में गुजरात की सैर के लिए एक प्लान बनाया था। मुझे यह कहने में गर्व है कि मैं एक रेल कर्मचारी हूँ और रेलवे ने मुझे और मेरे परिवार के लिए रेल गाड़ी में यात्रा करने के लिए सुविधा-पाँस दिया है। मैंने इधर-उधर कुछ जानकारी प्राप्त की और इसके बाद मैं ने मार्च 2023 में गुजरात की सैर की थी जिसके बारे में इस लेख में शेयर करने वाली हूँ।

मैं अपने परिवार के साथ गाड़ी सं.12656 नवजीवन एक्सप्रेस (चेन्नै-अहमदाबाद) से 10.10 बजे चेन्नै से निकलकर अगले दिन 18.00 बजे अहमदाबाद पहुंची। अगले दिन हमने अहमदाबाद शहर के दर्शनीय स्थान जैसे गांधी आश्रम, जामा मस्जिद, कांकरीया लेक, ऑटो वर्ल्ड विदेशी कॉर म्यूजियम, अदालत कुआं, अक्षरधाम मंदिर आदि देखे।

अगले दिन हम अहमदाबाद से सोमनाथ के लिए रेल गाड़ी से निकले और वेरावल रेलवे स्टेशन जो सोमनाथ मंदिर का निकटतम रेलवे स्टेशन है, वहां पर उतरे। वहां से सोमनाथ मंदिर 7 कि.मी. की दूरी पर है। हमने सोमनाथजी का दर्शन किया। सोमनाथ दर्शन के लिए कम से कम 1-2 घंटे का समय लग सकता है, विशिष्ट अवसरों पर यह अवधि बढ़ भी सकती है।

अगर हम किसी विशेष मंदिर या कुछ विशिष्ट स्थानों का सैर करते हैं तो ट्रेस कोड पर भी ध्यान दिया जाना है। लेकिन सोमनाथ मंदिर में ऐसा कोई विशेष ट्रेस कोड नहीं था। आप जानते हैं कि तिरुवनंतपुरम के अनंत पद्मवाभस्वामि मंदिर, गुरुवायूर, तिरुपति, मंत्रालय आदि मंदिरों में ट्रेस कोड रखा गया है जहां पुरुषों के लिए धोती और अंगवस्त्र तथा महिलाओं के लिए सलवार कमीज़ या साड़ी का ट्रेस कोड है।

सोमनाथ दर्शन के बाद हम द्वारका गए। सुबह 10 बजे तक द्वारकाधीश मंदिर में दर्शन किया और आसपास के गोपी तालाव, भड्केश्वर मंदिर, नागेश्वर ज्योतिर्लिंग, बेट द्वारका, रुक्मणि मंदिर, लाइट हाऊज़, द्वारका बीच आदि स्थानों का आनंद लिया।

अगले दिन हम द्वारका से एकता नगर रेलवे स्टेशन पहुंचे और वहाँ से हमने Statue of Unity, वल्लभभाई पटेल की बृहद मूर्ति देखने गए। यह मूर्ति 597 फीट ऊँची है और केवडिया गांव में स्थित है। इसके बाद हम गिर वन जो शेरों का घर कहा जाता है वहाँ गए थे। 500 से अधिक शेर इस गिर वन में हैं और हमने lion safari भी देखा।

इस प्रकार मैं अपने परिवार के साथ हर साल भारत के विभिन्न स्थानों की सैर करती आ रही हूँ और बहुत सारे हो चुका है थोड़ा बाकी है। इसके बाद मैं विदेश जाना चाहती हूँ। इस लेख को पढ़ने के बाद आप भी अपने परिवार के साथ पूरे भारत और विदेश की भी सैर करें

मेरा बिहार

अश्विनी कुमार

कनिष्ठ आशुलिपिक, हिन्दी अनुभाग, मुख्यालय



बिहार राज्य भारत के महत्वपूर्ण राज्यों में से एक राज्य है। बिहार राज्य की गणना देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान के बाद दूसरे नंबर पर होती है। बिहार राज्य संपूर्ण भारतवर्ष में अपना एक विशिष्ट महत्व रखता है, चाहे वह भौगोलिक क्षेत्रफल हो या जनसंख्या का दृष्टिकोण हो।

बिहार राज्य की मृदा उर्वरता बहुत ही ज्यादा प्रभावशील है। यहां पर नाना प्रकार की फसलें पाई जाती हैं। बिहार राज्य का प्राकृतिक सौंदर्य यहां के वातावरण की शोभा बढ़ा देता है। यहां की नदियां बिहार राज्य को सदैव फसलों से लगा हुआ रखती हैं। अतः यह कहा जाता है कि यदि भारत का विकास करना है तो बिहार राज्य का विकास

करना अति आवश्यक है। इसी उपलक्ष्य में भारत सरकार, बिहार राज्य की प्रगति के लिए जुटी हुई है।

बिहार हमेशा से संस्कृति में काफी धनी रहा है। बिहार, जैन और बौद्ध धर्म की जन्मस्थली है। साथ-साथ प्राचीन काल में विशाल मगध साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध रहा जिसकी राजधानी पाटलीपुत्र रही जो आजकल पटना के नाम से जाना जाता है। कवि कोकिल विद्यापति तथा भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद की जन्म स्थली होने के साथ ही माता सीता की जन्म भूमि भी बिहार ही है।

इस प्रकार बिहार ऐतिहासिक रूप से ख्यातिलब्ध राज्य है। वर्तमान में इसकी राजधानी पटना है जो महात्मा बुद्ध की तपोस्थली है जिसके कारण यहां पर कई बौद्ध भिक्षु भी रहने लगे। बौद्ध भिक्षुओं के रहने के स्थान को विहार कहते हैं और इसी विहार से इस राज्य का नाम बिहार पड़ा। बिहार एक हिंदी भाषा राज्य है। साथ ही उर्दू, मैथिली, भोजपुरी, मगदी तथा अंगिका भी यहां पर बोली जाती हैं। बिहार की एक तिहाई आबादी मैथिली बोलती है। बिहार की राजभाषा हिंदी है।

वर्तमान में देश की सबसे बड़ी सिविल सेवा परीक्षा हो या कोई भी सेवा क्षेत्र, सभी जगह बिहार के लोगों ने अपना परचम लहराया है। देश भर में सब से ज्यादा आईएएस अफसर बिहार के होते हैं।

बिहार की छठ पूजा काफी प्रसिद्ध है। इस त्योहार में सूर्य भगवान की पूजा की जाती है। यह तीन दिनों तक बिहार में काफी धुमधाम से मनाया जाता है। इसकी तैयारी एक महीने पहले से शुरू होती है- घर की साफ-सफाई से लेकर पूजा तक। लोग दुश्मनी भूलकर साथ मिलकर इस पर्व को मनाते हैं। राज्य के बाहर काम करने वाले लोग भी किसी तरह घर पहुंचने की कोशिश करते हैं। बिहार के सासाराम में शेरशाह का मकबरा है। बिहार में ककोलत जलप्रपात है। बिहार में हर त्योहार को बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं चाहे होली हो, दिवाली, ईद हो या रमजान, सभी बहुत खुशी के साथ मनाते हैं और साथ में भाई-भाई की तरह रहते हैं। बिहार में दुर्गापूजा भी काफी धुम-धाम से मनाते हैं। बारह दिनों तक माता रानी की पूजा की जाती है। यह त्योहार अच्छाई का बुराई पर जीत माना जाता है।

गंगा नदी बिहार के बीचों-बीच जाती है। यहाँ महावीर का भी मंदिर है जहाँ का प्रसाद बहुत ही खास है। बिहार का इतिहास काफी पुराना है। मगध वंश का उद्गम वहीं से हुआ है। सम्राट अशोक का जन्म स्थल बिहार ही है।

मोबाइल के परे जीवन

वी.पूर्ण कामेश्वरी

वरिष्ठ आशुलिपिक, परिचालन विभाग, मुख्यालय



मोबाइल फोन आज हमारी जरूरत बन चुका है, चाहे वो मनोरंजन के लिए हो या कोई जानकारी के लिए। सामान खरीदने के लिए हो या ऑनलाइन में खाना मँगवाने के लिए। कहीं जाना हो तो टिकट बुक करने तथा कैब बुक करने में भी फोन मदद करता है। फोन मुख्यतः लोगों से जुड़े रहने के लिए जरूरी हो गया है। परंतु जरूरतों से परे आजकल मोबाइल जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। आज फोन और जीवन के बीच का संबंध अटूट बन गया है। मोबाइल के बिना आप वैसे हैं जैसे बिना पंख की चिड़िया। हम सबकी दिनचर्या मोबाइल के बिना असंभव सा बन गई है।

आजकल कोई मोबाइल के बिना जिन्दगी जीने की कल्पना नहीं कर सकता है। संचार क्रांति ने हमारी दुनिया बदल दी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मोबाइल की वजह से आप अपने परिवार और मित्रजनों से जुड़े रहते हैं और सामाजिक संपर्क भी बना रहता है।

**आपका फोन बस फोन नहीं है,
ये रिशतों का जुड़ाव है आपके अपनों से॥**

आज के युग में, बिना मोबाइल के जीना असंभव है। आप अगर कहीं बाहर होते हैं तो आप मोबाइल संपर्क में रहते हैं यह तो हो गई एक साधारण सी बात। मोबाइल के द्वारा आप सोशल मीडिया, फेसबुक व्हाट्सएप, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि पर अपना वजूद स्पष्ट करते हैं। मोबाइल आपके पास हो तो आप अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं क्योंकि अगर आपको इधर-उधर कहीं भी खतरा या कोई दिक्कत नजर आती है तो आप तुरंत किसी न किसी को फोन करते हैं या व्हाट्सएप पर मैसेज करते हैं। महिलाओं के लिए मोबाइल एक वरदान है क्योंकि अगर महिलाएं किसी दिक्कत में होती हैं तो वे मोबाइल के माध्यम किसी से संपर्क कर सकती हैं। आजकल मोबाइल द्वारा लोग लाखों रुपए का ट्रांजैक्शन करते हैं। पहले मोबाइल न होने के कारण कई काम रुक जाते थे या महीनों लग जाते थे उस काम को करने के लिए, पर आज हर व्यक्ति के पास मोबाइल है और वे जल्दी ही अपना काम निपटा सकते हैं।

मोबाइल से इस अटूट संबंध के कारण मनुष्य थोड़ा बहुत खो भी गए हैं।

**किताबों को सदा के लिए कैद कर दी अलमारी में,
जिन्दगी उलझी पड़ी है मोबाइल और कंप्यूटर की मारा मारी में।**

आज तकनीक का युग है और यांत्रिक और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग बढ़ा है। कंप्यूटर, टीवी, इंटरनेट और मोबाइल फोन सभी रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गए हैं। लेकिन इनके ज्यादा इस्तेमाल से कई तरह के साइड इफेक्ट भी हो गए हैं। हम सब जानते हैं कि अगर किसी वस्तु का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल किया जाए तो वह हानिकारक हो सकती है। ऐसा ही कुछ मोबाइल फोन के साथ भी हुआ है। इससे कई प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा होती हैं। मोबाइल फोन को अपने पास रखने के काफी नुकसान हैं जिन्हें जानना जरूरी है...

1. मोबाइल फोन के रेडिएशन से उत्पन्न खतरों में सबसे बड़ा खतरा है कैंसर। अगर आप अपने मोबाइल फोन को पूरा दिन अपनी जेब में या शरीर से चिपकाकर रखते हैं तो संबंधित स्थान पर ट्यूमर होने की आशंका बढ़ जाती है और आप आसानी से कैंसर के शिकार हो सकते हैं।

2. रात के समय मोबाइल फोन को शरीर से सटाकर या सीने पर रखकर सोने की आदत है तो यह आदत आपके लिए बेहद खतरनाक ही नहीं जानलेवा भी हो सकती है। इसके अलावा इसके रेडिएशन का नकारात्मक प्रभाव आपके मस्तिष्क पर भी पड़ता है।
3. ज्यादातर पुरुषों में आदत होती है कि वे अपना मोबाइल फोन बेल्ट के पास पॉकेट में रखते हैं। पूरा दिन मोबाइल फोन को इस तरह से रखना आपके लिए बेहद हानिकारक है। मोबाइल फोन के इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकिरणों का प्रभाव आपकी हड्डियों पर भी पड़ता है और उनमें मौजूद मिनरल लिक्विड समाप्त हो सकता है।
4. पुरुषों में कमर के पास मोबाइल फोन को रखना और भी खतरनाक हो सकता है। दरअसल मोबाइल के रेडिएशन का नकारात्मक प्रभाव शुक्राणुओं में कमी के रूप में भी देखा जा सकता है।
5. विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक शोध के अनुसार मोबाइल फोन का अत्यधिक इस्तेमाल मस्तिष्क के कैंसर के लिए जिम्मेदार होता है। इसके विकिरण के प्रभाव के चलते ब्रेन ट्यूमर हो सकता है।
6. मोबाइल फोन से निकलने वाली इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकिरणों से आपका डीएनए तक क्षतिग्रस्त हो सकता है। इसके अलावा इसका अधिक इस्तेमाल आपको मानसिक रोगी भी बना सकता है।
7. तनाव और डिप्रेशन के कारणों में एक प्रमुख कारण मोबाइल फोन से निकलने वाले रेडिएशन के खतरनाक प्रभाव भी हैं। यह आपके दिमाग की कोशिकाओं को संकुचित कर देता है जिससे ब्रेन में ऑक्सीजन की सही मात्रा नहीं पहुंच पाती।
8. गर्भवती महिलाओं द्वारा मोबाइल फोन का अधिक इस्तेमाल, गर्भस्थ शिशु को प्रभावित कर सकता है। इससे शिशु के दिमाग पर नकारात्मक असर पड़ सकता है और उसका विकास प्रभावित होता है।
9. मोबाइल फोन के हानिकारक विकिरण न केवल कैंसर जैसी बीमारी को जन्म देते हैं बल्कि यह डायबीटीज और हृदय रोगों की संभावनाओं को भी कई गुना बढ़ा देता है।

मोबाइल फोन का सीमित इस्तेमाल ही इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकिरणों के दुष्प्रभाव को कम कर सकता है। इसके अलावा इसे अपने शरीर से सटाकर न रखते हुए पर्स में या फिर अन्य स्थान पर रखना ज्यादा सही होगा।

लेकिन ऊपर दिए गए नुकसानों के कारण क्या हम मोबाइल के बिना रह सकेंगे? मोबाइल फोन के बिना रहना बिल्कुल संभव है। हालांकि जब मोबाइल फोन नहीं था तभी भी हम जीते थे, लेकिन धीरे-धीरे मोबाइल ने हमारे जीवन में जगह बना ली है। मोबाइल फोन के होने या न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर आपने ये बातें सीख ली तो आप जीवन में अगला कदम लेंगे। आप जब भी अकेले हों या बोर हो रहे हों तो अपने बाहर देखने के बजाय अपने मस्तिष्क पर ध्यान दें और देखें कि किस तरह के विचार चल रहे हैं इसमें, क्या आप बाहर के लोगों पर ध्यान दे रहे हैं या बस विचारों की एक श्रृंखला या दृच्छक रूप से आपके मन में चल रही है। मन को तो बस मजा चाहिए। इसको कोई फर्क नहीं पड़ता की इसमें आपका बहुमूल्य समय खर्च हो रहा हो। तब आपको करना है आप मोबाइल के पीछे चलकर अपना कीमती समय खर्च करना चाहते हैं या अपनी प्राथमिकताओं के पीछे चलकर अपने जीवन के लक्ष्यों को पूरा करना चाहते हैं।

**धूप में निकलो, घटाओं को हटा कर देखो
जिंदगी क्या है मोबाइल हटा कर देखो**

मोबाइल फ़ोन सुविधा का खजाना जरूर है। मोबाइल फ़ोन का नाम आते ही हम सोचते हैं कि एक समय ऐसा भी था जब हरकारों और कबूतरों के माध्यम से संदेश भिजवाए जाते थे। बाद में चिट्ठी-पत्री के माध्यम से संदेश भेजने का सिलसिला शुरू हुआ, जिसमें महीनों बाद भी संदेश नहीं पहुँच पाता था। पर आज मोबाइल फ़ोन से हम इस तरह बातें करने लगे हैं, मानो आमने-सामने बैठे बातें कर रहे हों।

मोबाइल फ़ोन के बढ़ते प्रयोग के कारण संचार की दुनिया में क्रांतिकारी बदलाव आ गया है। मोबाइल फ़ोन से बात करना जहाँ सस्ता है वहीं यह सर्वसुलभ होता जा रहा है। तार, टेलीग्राम, लैंड लाइन फ़ोन से लोगों को वे सुविधाएँ नहीं मिल पाती हैं जो मोबाइल फ़ोन से मिल जाती हैं। पहले लैंड लाइन फ़ोन की बुकिंग, फिर उसे लगवाने का खर्च और महीने के अंत में भारी भरकम बिल। और वैसे इस फ़ोन के मामले में हमें वहीं चलकर बात करनी होती थी जहाँ फ़ोन रखा होता था। मोबाइल फ़ोन से ये बाधाएँ खत्म हो गई हैं। सचमुच संचार जगत में क्रांतिकारी बदलाव लाने का श्रेय मोबाइल फ़ोन को जाता है।

मोबाइल फ़ोन कितना सुविधाजनक है यह इसकी निरंतर बढ़ती लोकप्रियता देखकर लगाया जा सकता है। आज मोबाइल फ़ोन रु.500 से लेकर कई हज़ार की कीमत तक उपलब्ध हैं। खरीदने वाले अपनी सुविधानुसार खरीद रहे हैं। मोबाइल फ़ोन खरीदने के लिए गली-मोहल्ले की किसी दुकान तक ही जाने की ज़रूरत रह गई है। अब तो बस ऑर्डर करने भर की देर है अमेज़न, फ्लिपकार्ट, शॉप-क्लूस जैसी कंपनियाँ आपकी सुविधा के अनुसार आपके दरवाज़े पर आने को तैयार खड़ी हैं। मोबाइल फ़ोन आपकी जेब में है तो आप घर, बाहर, दफ़्तर कहीं भी बातें कर सकते हैं। आप यात्रा करते हुए बस, ट्रेन या प्लेन में भी अपने निकट संबंधियों से जुड़े रहते हैं। इसके अलावा मोबाइल फ़ोन पर बातें करना और सस्ता होता जा रहा है।

तकनीकी में आते बदलाव का असर मोबाइल फ़ोन पर दिखाई पड़ने लगा है। कुछ समय पहले तक इनका आकार इतना बड़ा होता था कि ये जेब से बाहर दिखते रहते थे। आजकल मोबाइल फ़ोन के आकार में बदलाव आया है। यह फ़ोटो खींचने, फ़िल्में बनाने और देखने, अपनी फ़ोटो स्वयं खींचने के अलावा गाने सुनने, गणितीय संक्रियाएँ करने जैसे कार्यों में भी लगाया जाता है। इसमें कंप्यूटर की इतनी सारी खूबियाँ आ गई हैं कि इसे जेब में रखा जाने वाला कंप्यूटर तक कहा जाने लगा है। मोबाइल फ़ोन के कारण अब निकट संबंधियों के बीच दूरी इतनी सिमट गई है कि जब चाहे उनसे बात कर लें।

अकसर लोगों को अकेलापन डराता है,

मगर पास स्मार्ट फोन हो तो बड़ा मजा आता है।।

मोबाइल फ़ोन सुविधाजनक तो है ही पर गलत हाथों में पड़कर इसका दुरुपयोग किया जाने लगा है। कुछ लोग दूसरों के समय की परवाह किए बिना समय-असमय फ़ोन कर देते हैं। इतना तो ठीक है पर मिसकाल से परेशान करने की चेष्टा दुखद होती है। कुछ युवा अनचाहे लोगों की फ़ोटो खींचकर परेशान करते हैं या अश्लील मैसेज भेजकर उन्हें बदनाम करने की कोशिश करते हैं।

वर्तमान में सभी प्रकार की सूचनाएं एवं सुविधाएं इंटरनेट के माध्यम से मोबाइल पर उपलब्ध कराई जा रही हैं। उन सुविधाओं का फायदा उठाकर जानकारी हासिल कर मोबाइल को जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल किया जा रहा है। साथ ही एक-दूसरे से संपर्क करना और वीडियो कॉल करना भी आम बात हो गई है।

चूंकि मोबाइल एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है, इसलिए यह विकिरण का माध्यम है। जैसे-जैसे मोबाइल की स्क्रीन भी जगमगाती रहती है और आप इसे लगातार देखते रहते हैं, वैसे-वैसे आंखों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है। रीढ़ की हड्डी में दर्द भी बढ़ जाता है क्योंकि मोबाइल का इस्तेमाल

करते समय आपको अपनी गर्दन और पीठ को मोड़ना पड़ता है। अन्य दुष्प्रभाव जैसे हाथों की मांसपेशियों में सनसनी का नुकसान, अनिद्रा, लगातार डर और चिंता भी महसूस की जाने लगी है।

यह कहना गलत नहीं होगा कि मार्केटिंग कंपनियों ने इसका फायदा उठाया है क्योंकि मोबाइल फोन लोगों का पूरा ध्यान खींच रहे हैं और उन्होंने एप्लिकेशन, विभिन्न गेम और सोशल मीडिया के रूप में एक अलग दुनिया की खोज की है। तो मनुष्य वास्तव में अपना वास्तविक कौतुहल ही भूल गया है। कई सर्वेक्षणों और चिकित्सा अनुसंधानों में पाया गया है कि औसतन तीन से चार घंटे तक मोबाइल के उपयोग से मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इससे व्यक्ति की इंद्रियों की शक्ति, स्मृति और एकाग्रता कम हो रही है। मोबाइल की लगातार आदत समय के साथ लत बन सकती है। मनुष्य लगातार चिंतित हो सकता है।

काम में मन लगाया करो,

मोबाइल से खुद को बचाया करो,

मोबाइल में कहीं तुम डूब ना जाओ,

इससे थोड़ी दूरी बनाया करो

मोबाइल की लत में हम स्वयं को अपने मोबाइल से दूर नहीं रख पाते हैं। कोई विशेष काम न होने पर भी हम मोबाइल को स्क्रोल करते रहते हैं। आज के समय में हमें मोबाइल की इतनी बुरी लत है, इसका अनुमान आप इस वाक्य से लगा सकते हैं- 'मोबाइल की लत को दूर करने के उपाय हम घंटों लगाकर मोबाइल पर ही डूबते हैं'। यह आदत हमारे जीवन को बहुत अधिक प्रभावित करता है।

हमारे स्वास्थ्य पर मोबाइल फोन के लत का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके अधिक उपयोग से व्यक्ति में चिड़चिड़ापन का होना, हमेशा सिर दर्द की समस्या, नेत्र संबंधित समस्या, अनिद्रा व मोबाइल के हानिकारक विकिरण से हृदय संबंधित रोग भी हो सकते हैं।

वर्तमान में मोबाइल पर बैंकिंग, शिक्षा, ऑनलाइन बुकिंग, गेमिंग, सोशल मीडिया जैसी विभिन्न सेवाओं का लाभ उठाया जा सकता है, जिससे कोई भी आसानी से मोबाइल का उपयोग करने से बच नहीं सकता है। लेकिन इसे नियंत्रित करना संभव है।

प्रतिकूल लक्षणों का अनुभव होने पर वयस्क अपने मोबाइल के उपयोग को कम करने में सक्षम हो सकते हैं, लेकिन छोटे बच्चों और किशोरों के लिए मोबाइल के उपयोग से बचना असंभव है। इसलिए यह इनके लिए बहुत ही खतरनाक है।

आने वाले समय में मोबाइल का इस्तेमाल बढ़ता रहेगा। तो साइड इफेक्ट भी बढ़ने वाला है। यदि समय रहते इस पर विचार नहीं किया जाता और कुछ ठोस उपायों की योजना नहीं बनाई जाती तो व्यक्ति और समाज को इसके परिणाम भुगतने होंगे। आइए हम सब मोबाइल से थोड़ी देर के लिए दूर रहकर जीने का मजा उठाएं।

मोबाइल को मत रखो इतने पास,

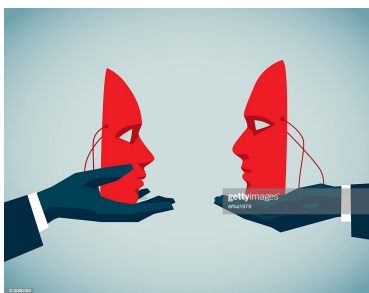
कि अकेलेपन का भी ना हो एहसास।



समानता या अक्षीलता

रूपा मंडल

कनिष्ठ अनुवादक, सेलम मंडल



समानता के नाम पर, नारीवाद का चोला ओढ़े माथे पर बड़ी सी बिंदी लगाकर देश के अंदर कुछ महिलाएं, महिलाओं के अधिकारों तथा पुरुषों के साथ समानता के लिए कहीं पर भी धरना देते या फिर सोशल मीडिया पर ट्विट करती हुई, वीडियो बनाकर उन पर अपने अनाप-सनाप भाषण देती हुई मिल जाएंगी। उनके लिए या फिर उनको फॉलो करने वालों के लिए महिला समानता का मतलब सिर्फ इतना होता है कि वो सार्वजनिक स्थानों पर सिगरेट

पीएं, शराब पी सकें, किसी को भी गाली दे सकें, अक्षीलता फैलाते कपड़े पहन सकें। इनके लिए ये सब 'बाई च्वाइस' होना है। कोई भी उन पर कॉमेंट न करें और अगर कोई करें तो भिन्न-भिन्न प्रकार की कानूनी धाराएं लगाकर उसे जेल करा दी जाए। वैसे तो बहुत से मुद्दे हैं जो नारी समानता के नाम पर ये खोखला नारीवाद फैला रहे हैं। किंतु आज मैं जिस विषय पर अपने विचार लिख रही हूँ, हो सकता है कुछ लोग मेरे विचारों से सहमत न हों।

कुछ महीनों पहले दिल्ली मेट्रो में एक लड़की ने इतने छोटे कपड़े पहनकर सफर किया था कि चाहकर भी कोई उसकी तरफ नहीं देख पा रहा था। उसके कपड़े इतने छोटे थे कि अक्षीलता की सारी हड्डें पार हो रही थीं। अब कपड़ों पर इतना हल्ला क्यों? 'वो स्त्री है कुछ भी कर सकती है...!' यह एक तरह से अलग प्रकार का मामला था, जिसके आने के बाद से सोशल मीडिया पर समानता को लेकर बहस छिड़ गई है। कई लोगों का कहना है कि लड़कियों के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया जाता, जबकि लड़कों को बख्शा नहीं जाता। अब बात आती है कपड़ों पर इतना हल्ला क्यों?... सीधी सी बात है, लड़की करे तो आज़ादी, लड़का करे तो 'अक्षीलता'! मतलब कि Hypocrisy, लेकिन इसकी भी सीमा होती है।

उस समय सोशल मीडिया पर बहुत से लोग समानता की मांग लिए यही लाइन बार-बार दोहरा रहे थे। मामला है, उन कपड़ों का जो एक पुरुष पहने तो उस पर 'अक्षीलता' फैलाने का आरोप लग जाता है, वहीं जब महिला पहने तो खुले विचारों वाली आइडियल बन जाती है। पुरुष पर आरोप लगते हैं कि उसने पब्लिक प्लेस पर कम कपड़े पहनकर महिलाओं का अपमान किया है, मगर जब महिला ये काम करे तो 'Her Body Her Choice' का ढिंढोरा चारों ओर पीटा जाने लगता है। अक्षीलता को हमारे देश में दो तरीकों से देखा जाता है। अगर महिला करे तो ठीक, मगर पुरुष करे तो तौबा-तौबा। यहां पर मुझे बिहार वाले विधायक का मामला याद आता है। अरे वही जो ट्रेन में चट्टी-बनियान पहनकर घूम रहे थे। उनका वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ और विधायक जी इतना ट्रोल हुए कि बवाल हो गया। मामला इतना फैला कि नेताजी को लोगों ने क्रिमिनल तक घोषित कर दिया था। सीसीटीवी की जांच हुई, एफआईआर दर्ज हुई और जोर-शोर से गिरफ्तारी की मांग उठी। मगर जब दिल्ली मेट्रो वाली लड़की ने विधायक से भी ज्यादा छोटे कपड़े पहने तो वो रॉकेट की स्पीड से फेमस हो गई।

अब इसे आधुनिक समाज के दोयम दर्जे की सोच ही कहेंगे कि उस मेट्रो वाली लड़की के खिलाफ अभी तक कोई शिकायत दर्ज नहीं हुई और न ही दिल्ली मेट्रो ने कोई जुर्माना लगाया।

हालांकि दिल्ली मेट्रो ने अपने बयान में कहा था कि दिल्ली मेट्रो के संचालन और रखरखाव अधिनियम में धारा-59 के तहत अभद्रता को दंडनीय अपराध माना गया है। उन्होंने इस मामले से यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि अश्लीलता और अभद्रता में काफी अंतर होता है। वैसे भी किसी महिला से क्यों पंगा लें। अगर लड़की के खिलाफ दिल्ली मेट्रो कोई एक्शन लेती भी तो बड़ी बिंदी गैंग सड़कों पर उतर आता और समानता के नाम पर हाय-तौबा मचा देता।

मात्र छोटे कपड़े पहनकर और फ्रीडम ऑफ च्वाइस के कारण फिलहाल 19 साल की वह लड़की उन दिनों जगह-जगह इंटरव्यू देती नजर आई। उसके इंस्टाग्राम पर पहले 2600 फॉलोअर्स थे, लेकिन महज चार से पांच दिन में खबर लिखे जाने तक यह आंकड़ा 30 हजार को पार कर गया था। इस लड़की की तुलना उर्फी जावेद से की गई। उर्फी जावेद वही लड़की है, जो खुद को मॉडल और एक्ट्रेस बताती है, भले ही वो किसी फिल्म या सीरियल में कम, और एयरपोर्ट और सड़कों पर प्लास्टिक, सिम जैसी चीजों से बने छोटे कपड़े पहने ज्यादा दिखाई देती हो। उसने अपनी एक खास पहचान बना ली है। आप क्या सोच रहे हैं? टैलेंट के दम पर? बिल्कुल नहीं... कपड़ों के दम पर। इन कपड़ों की सबसे बड़ी खूबी है, इनकी कम लंबाई। वह आए दिन मुंबई की सड़कों पर कम कपड़े पहने दिखाई देती है। इसी वजह से इंटरनेट पर छाई हुई है। सड़क से लेकर इंटरनेट तक ताने सुनने वाली उर्फी अपनी पॉपुलैरिटी से खुश है। खैर... 'हर बाँडी हर चाँइस'। मैं भी इस बात का पूरा सम्मान करती हूँ। उनकी मर्जी जो चाहे वो पहने। मगर यहां एक दिक्कत जरूर है, जो आप भी फील कर ही रहे होंगे। दिक्कत है, समानता की।

क्या आपको न्यूड फोटोशूट कराने वाले बॉलीवुड एक्टर रणवीर सिंह याद हैं? अरे वही, जो हम सबकी प्रिय दीपू के हस्बैंड हैं। बंद कमरे में शूट कराने वाला रणवीर इतनी बुरी तरह ट्रोल हुआ था कि आने वाले कई साल तक लोग इस मामले को भूलने वाले नहीं हैं। उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई। उसे पुलिस थाने में बयान तक दर्ज कराना पड़ा था। ये फोटोशूट एक मैग्जीन कवर के लिए हुआ था। यहां बात ध्यान देने वाली इसलिए है कि विधायक ने महज एक बार ऐसे कपड़े पहने और रणवीर ने बंद कमरे में ये फोटोशूट कराया, तो बवाल मच गया। लेकिन मेट्रो वाली लड़की और उर्फी जावेद पब्लिक प्लेस पर रोज इस तरह के कपड़े पहनकर घूमती हैं, मगर मजाल है कोई उंगली उठा दे। जिसने उंगली उठाई उसकी सोच छोटी। वो महिलाओं का अपमान होगा।

अगर आपको कपड़ों के मामले में इतना लचीली सोच वाला बनना ही है, तो जो आजादी उर्फी और बिकिनी वाली लड़की को है, वही आजादी विधायक और रणवीर सिंह को क्यों नहीं है? इनका नाम आते ही लोग क्यों समानता जैसा बहुप्रचलित शब्द भूल जाते हैं? वही इक्वालिटी जो एक महिला के मामले में सही है मगर पुरुष के मामले में कतई नहीं।

दिल्ली मेट्रो में ट्रेवल करने वाली लड़की ने बताया कि वह कई महीनों से ऐसा कर रही है। लड़की ने अपने कपड़ों को आजादी से जोड़ा। कई रिपोर्ट्स तो ऐसी भी आईं जिनमें कहा गया कि देश के युवाओं को ऐसी लड़कियों का फीवर चढ़ गया है। ऐसे में सवाल यह है कि क्या ये लड़कियां कम कपड़े पहनने की वजह से स्टार बनी हैं? इनके सपोर्ट में भी बड़ी तादाद में लोग उतर रहे हैं। इन्हें फेमिनिज़म का उभरता चेहरा तक बताया जा रहा है। इनके फैन्स का कहना है कि ये जो कर रही हैं, सही है। ये फैन्स अपने आप को काफी खुले दिमाग वाले मानते हैं। सोशल मीडिया पर इनके द्वारा जो सोच लिखी जाती है वह कितनी बढ़िया है। मगर जैसे ही सिक्के के दूसरे पहलू पर नजर डालें, तो हमें इन्हीं लोगों के

ओपिनियन एकदम उल्टे क्यों दिखाई देते हैं? जब बात पुरुषों की हो, तो गालियां क्यों सुनाई देती हैं? तालियां क्यों नहीं बजती? विधायक पर अश्लीलता फैलाने के आरोप लगे और गिरफ्तारी की मांग उठी। तब लोग शायद समानता शब्द को भूल गए थे। 'हिज बॉडी हिज चॉइस' भी किसी के जहन में नहीं आया। विधायक के खिलाफ कई धाराओं के अधीन मामला दर्ज हुआ था। हालांकि उन्होंने बाद में सफाई देते हुए कहा कि उनका पेट खराब था, इसी वजह से वह तौलिया बांधना भूल गए थे।

मध्य प्रदेश के इंदौर में रणवीर के फोटो शूट को 'मानसिक कचरा' करार दे दिया गया और लोग बाकायदा कपड़े दान करने लगे थे। महिला तो महिला, पुरुषों ने भी रणवीर की तस्वीरों को अश्लीलता, गंदगी, कचरा और न जाने किन-किन नामों से पुकारा। महिलाओं ने भी ट्रोलिंग में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। रणवीर सिंह के खिलाफ भी कई धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था।

अब सवाल ये उठता है कि क्या सिर्फ पुरुष ही अश्लीलता फैला रहे हैं? पब्लिक प्लेस पर रोज बिकिनी पहनने वाली लड़कियां खुले विचार वाली हैं और बंद कमरे में शूट कराने वाला पुरुष अश्लीलता फैला रहा है, क्या ये सही है? क्या पुरुष ही अश्लीलता फैला रहा है, महिला नहीं? या तो आप दोनों के लिए ही कहिए कि उनका शरीर, उनकी मर्जी, उनके कपड़े। या तो फिर किसी एक जेंडर को टारगेट करना बंद करना होगा।

अब जान लेते हैं कि आखिर अश्लीलता है क्या? यहां अश्लीलता पर कानून तो बना है लेकिन इसे स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है। IPC की धारा 292 और IT एक्ट 67 में उस सामग्री को अश्लील बताया गया है, जो कामुक होती है या फिर कामुकता पैदा करती है। हालांकि कानून में कामुक या फिर कामुकता किसे माना जाए, इसे लेकर कुछ भी स्पष्ट नहीं किया गया है।

अगर समानता की मांग की जाती है तो सभी के लिए समानता चाहिए, यही मेरा विचार है। बदलते समय में इन सबके लिए उत्तर मिल सकता है।



यों तो जिंदगी में अजीब से मोड़ आयेंगे,
कभी खुशी तो कभी गम लायेंगे
रखना खुद को संभल के
क्योंकि आप हंसेंगे तो हम भी मुस्कराएँगे

साक्षात्कार वाला- सफलता का राज़ क्या है
बेरोजगार युवक - सही निर्णय
साक्षात्कार वाला- सही निर्णय कैसे लेंगे
बेरोजगार युवक - अनुभव से
साक्षात्कार वाला- अनुभव कैसे मिलेगा
बेरोजगार युवक - गलत निर्णय लेने से

माँ

रजत प्रियदर्शी

वरिष्ठ लिपिक. कार्मिक विभाग, मुख्यालय



इस संसार की सबसे आसान और सुन्दर व अनमोल शब्द है – माँ। माँ दुनिया का एकमात्र ऐसा शब्द है, जिसे किसी परिभाषा की जरूरत नहीं, क्योंकि यह शब्द नहीं, एक एहसास है। माँ सुनते ही हमारे मन और मस्तिष्क में ममता, प्यार, त्याग, मार्गदर्शन के भाव उमड़ पड़ते हैं क्योंकि

माँ प्रार्थना है, प्रसाद है, धरा है, माँ बच्चों की लोड़ी है, दुलार है, मेवा है। माँ ईश्वर की प्रतिमूर्ति है। यूं तो माँ को और उसके ममत्व को परिभाषित करना संभव नहीं है, क्योंकि जब कोई शिशु जन्म लेता है तो उसका पहला निवाला उसकी माँ की अमृत रूपी दूध ही है जिसे माँ अपने कलेजे से लगाकर उस नवजात शिशु को पिलाती ही जिसका पान करते ही वह शिशु खिलखिलाने लगता है। इतना ही नहीं उस अमृत वसुधा में रोग-निरोधी सारे पोषक तत्व मौजूद होते हैं जिससे उस शिशु का पोषण होता है और रक्षा होती है। माँ तो माँ ही है जो अपने बच्चे को इस संसार में लाने के लिए गर्भावस्था से लेकर उसके जन्म होने तक तमाम तकलीफों और असहनीय पीड़ा को खुशी-खुशी झेल जाती है। इस दौरान न जाने कितनी माताओं की जानें चली जाती हैं और वे अपने बच्चे के चेहरे तक नहीं देख पाती हैं। शायद यही कारण है कि माँ को इस संसार में भगवान से श्रेष्ठ माना जाता है। और उसकी संज्ञा सबसे अब्बल है। शायद माँ ईश्वर का दिया हुआ इस संसार का सबसे अनमोल उपहार है जिसकी छाँव के बिना जिंदगी शायद ही संभव है। तभी तो उस नवजात शिशु का पहला निवाला से लेकर प्रथम उच्चारण और प्रथम पाठशाला माँ ही होती है। माँ अपने बच्चों का अनुशासन सिखाती है और उसे अच्छे संस्कारों की सीख देने वाली वह देवी है जिसके प्रभाव से वह बच्चा सबल और जिम्मेदार व्यक्ति बनता है। वह, अपनी माँ से प्राप्त संस्कारों से न केवल स्वयं का जीवन चरितार्थ करता है बल्कि परिवार और समाज के प्रति भी अच्छे विचार रखते हुए उसका चिंतन और विकास करता है। परिणाम स्वरूप हम कह सकते हैं कि माँ अपने बच्चों के साथ-साथ पूरे परिवार और एक सभ्य समाज की भी जननी है। माँ इस संसार की सबसे बड़ी योद्धा है जो अपने बच्चों के लिए कुछ भी कर गुजरने को तत्पर रहती है। वह अपने बच्चे के लिए अपनी सुन्दरता, अपना स्वरूप सभी का त्याग करती है।

माँ, त्याग की मूर्ति है। वह अपने बच्चों को सुलाने के लिए रात भर जगती है, उसकी लोरी बनती है, उसकी नींद बनती है। माँ अपने बच्चों को जब तक भरपेट खिला न देती तब तक उसे राहत नहीं मिलती है, और बच्चे जब खाते हैं तो मानो माँ का पेट भर जाता है। जब बच्चे को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ आती हैं तब माँ अपने बच्चे के लिए जमीन-आकाश एक कर देती है। वैद्य और हकीम के चक्कर लगाती है, मन्त्रें मांगती है। माँ अपने संतान के हर छोटे-मोटे शरारतों को नजर अंदाज करती है। अपने बच्चों की मांगें मनवाने के लिए अपने पति से जिद करती है। माँ वह है जो हर स्थिति में अपने बच्चों से उतनी ही प्यार और स्नेह करती चाहे वह बच्चा कितना भी बड़ा क्यों न हो बच्चा भला हो, बुरा हो, बड़ा होकर गलत रास्ते पर ही क्यों न बढ़ा हो, माँ का उनके प्रति ममता निरंतर विद्यमान रहती है और संतानों का कल्याण ही चाहती है।

माँ का व्याख्यान करते-करते अपनी माँ की झलक मेरे मन-मस्तिष्क में घूमने लगी है। मेरे बचपन की सारी यादें, उनका मेरे प्रति अगाढ़ प्रेम, स्नेह और उनकी ममता निश्चय ही मेरे हृदय में संवेदना भाव पैदा कर देती है। यूं तो मुझे अपनी माँ को याद करने की आवश्यकता नहीं होती है,

क्योंकि आज मैं रोजी-रोटी और आवश्यकताओं के कारण उनसे भले ही दूर हूँ, मगर संपर्क में रहता हूँ। उनसे हमेशा हाल - समाचार पूछता हूँ और उनसे बात करके मेरे दिल को सुकून मिलता है। पिछले कुछ दशकों में मीडिया और पश्चिमी सभ्यता का प्रसार हुआ है जिसके फलस्वरूप पिछले कुछ समय से हम देख रहे हैं कि कुछ लोगों द्वारा किसी एक दिन "मातृ दिवस" मनाया जाता है। कुछ लोगों का तर्क है कि चलो इसी बहाने लोग एक दिन के लिए ही सही अपनी माँ को याद तो कर रहे हैं न। परंतु इस संदर्भ में हमारा मानना है कि माँ को याद वे करते हैं जो उन्हें भूल जाते हैं। माँ के प्रति आदर, सम्मान और प्यार दिखाने के लिए केवल एक ही दिन काफी है? अगर हम माँ के प्रति सच्ची श्रद्धा और सम्मान रखते हैं तो हमें आज से ही संकल्प लेना है कि कभी भी उनसे ऊँची आवाज में बात न करें, उनकी बातों को तव्वजो दें, उनका ख्याल रखें। इन सब से बड़ी बात आप अपने जीवन में सफल हों यही हर माँ का सपना होता है। सही मायने में यही आपका उनके लिए सही आदर और सम्मान होगा। हालांकि माँ के साथ-साथ पिता के त्याग और बलिदान को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि पिता- रोटी है, कपड़ा है, मकान है। पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आशियां हैं, पिता पालन है, पोषण है, पिता परिवार का अनुशासन है। माता-पिता ही हमारे लिए सब कुछ हैं।



अध्यापक- तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ

छात्र -चेको सलावा किया से

अध्यापक- उसका हिज्जा बोलो

छात्र - माफ कीजिए सर शायद मैं गोवा में जन्मा था।

खुशी में भी हँसो

दुख में भी हँसो

हमेशा हँसते रहो

तभी सभी विश्वास करेंगे कि आप पागल हैं।

मेडिकल, इंजीनियरिंग और आर्ट्स कालेज के प्रिंसिपल में वाद-विवाद होने लगा कि

किसके विद्यार्थी निडर हैं

मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल ने अपने छात्र को पहाड़ से कूदने को कहा तो तुरंत उसने कूद लिया

इंजीनियरी कालेज प्रिंसिपल ने अपने छात्र को सागर में कूदने को कहा तो उसने भी तुरंत कूद लिया

दोनों ने आर्ट्स कालेज के प्रिंसिपल को देखते हुए पूछा -

देखा, हमारे छात्र कितने निडर हैं

आर्ट्स कालेज के छात्र को जब प्रिंसिपल ने पहाड़ से कूदने को कहा

तुरन्त उत्तर मिला - क्या मुझे बेवकूफ समझते हो, उल्लू, कुत्ते, चाहो तो तुम कूदो,

मुझे क्यों कूदने को कहते हो,

आर्ट्स कालेज का प्रिंसिपल बोला – देखा, अब मालस हो गया न कि कौन निडर है

मेरा पहला निबन्ध

वी. जयश्री

कार्यालय अधीक्षक, इंजीनियरी विभाग, मुख्यालय

मैंने अंग्रेजी साहित्य में बी.ए किया था। उस समय मेरी कक्षा में मेरे निबन्ध तथा किसी भी चरित्र व पात्र के वर्णन बहुत ही विख्यात थे क्योंकि मेरा स्टाइल एक दम अलग था।

पहले साल में मशहूर भारतीय लेखक आर. के. नारायण के अंग्रेजी उपन्यास के पात्रों पर वाद-विवाद चल रहा था। उसका नायक 'श्रीराम' एक मामूली युवक था जो थोड़ा डरपोक, लड़कियों से बात करने में हिचकिचाने वाला था। वह हमारे जीवन के बॉय नेक्स्ट डोर जैसे था जिसे हम अपने दैनिक जीवन में देख सकते हैं। तो हमारे प्रोफसर ने सवाल उठाया वह 'हीरो' है या नहीं। कक्ष के ज्यादातर विद्यार्थियों का मानना था कि वह एक मुख्य पात्र है, और कुछ नहीं। जब मेरा मौका आया तब मैं जोर से बोली "वह हीरो हैं"। प्रोफेसर बोलीं "ऐसा तुम मानती हो क्या, ठीक है, चलो, अपना लेख पढ़कर सुनाओ"। मैं ने बहुत विस्तृत रूप से लेख लिखा था, उसे पढ़ा और अंत में बोली श्रीराम एक आम युवक है और आज का हीरो है लेकिन शेक्सपीयर के उपन्यासों या नाटकों के या सिनेमा के नायकों के समान तो नहीं है लेकिन वह हीरो जरूर है जिनसे जिन्दगी में रोज हम मिलते रहते हैं। मेरा यह निबन्ध सबको पसंद हो गया और पूरे कॉलेज में तीन सालों तक जो भी वाद-विवाद हुए या निबन्ध लिखे गए सबमें मेरे विचारों को बहुत सराहा गया और वे बहुत प्रशंसनीय हो गए थे।

फिर कॉलेज के बाद आरआरबी परीक्षा, रेलवे नौकरी, शादी, स्थानांतरण, बच्चों की परवरिश में जीवन बीतता गया। बीच में एक दो बार 'रीडर्स डायजेस्ट' के लिए निबन्ध भेजे लेकिन वे सब बिना प्रकाशित वापस आ गये। तो निराश होकर मेरी लिखने की अभिलाशा को छुपाकर समय बिता रही थी।

इतने में हम अफ्रिका में थे और मेरा पहला लड़का आठवीं कक्षा में पढ़ रहा था। वह अफ्रिका के स्कूल में पढ़ रहा था। थोड़ा बुद्धिमान था और मशहूर भी था। इसलिए एक दिन उसके टीचर ने कहा - तुम क्लास कप्तान होने के नाते एक निबन्ध जरूर देना, स्कूल मैगजीन के लिए। वह पढ़ाई, खेलकूद सबमें बहुत होशियार था लेकिन लिखने में उसकी रुचि नहीं थी। इसलिए थोड़ा उदास था इस निबन्ध के मामले में। मैंने उसे सुझाव दिया कि मैं एक लेख लिखकर दूंगी। वह राजी हो गया। तो मैंने फटाफट रुचिमय निबन्ध उसके नाम पर लिख डाला और उसके हाथ में दे दिया। बात यह हुई कि वह लेख स्कूल मैगजीन में प्रकाशित हुआ। तो अम्मा थीं खुश और बेटा भी। इसी प्रकार प्रकाशित हुआ मेरा पहला निबन्ध। रेलवे में भर्ती होने के सालों बाद आजकल मैं मुख्यालय के राजभाषा अनुभाग के इस पत्रिका में अपने विचारों को व्यक्त करने की कोशिश कर रही हूँ जिसके लिए मुझे प्रोत्साहित भी किया जा रहा है।



जब आप सांस लेते हैं तब रेस्पियर करते हैं
जब आप सांस नहीं लेते हैं
तो एक्सपेयर होते हैं

महात्मा बुद्ध: त्याग और समर्पण की प्रतिमूर्ति

धर्मराज मीणा

वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/योजना एवं विकास, इंजीनियरी विभाग, मुख्यालय

भगवान गौतम बुद्ध को कौन नहीं जानता? महात्मा बुद्ध ने धर्मचक्र प्रवर्तन किया और उसके पश्चात जो हुआ उसका साक्षी सारा संसार रहा। मैं इस लेख में भगवान बुद्ध की जीवनी, और उनके द्वारा बताये गए उपदेशों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ जो हमें किसी भी तरह की हिंसा न करने तथा जीवन में त्याग को अपनाने की सीख देते हैं।

सबसे पहले मैं उनके बचपन से लेकर, दिव्यज्ञान की प्राप्ति के लिए घर छोड़ने तक की घटना का उल्लेख करना चाहता हूँ। आधुनिक नेपाल से दक्षिण में कपिलवस्तु नाम की नगरी थी। गौतम गोत्र के शाक्यवंश के क्षत्रियगण वहाँ वास करते थे। इनके ही नेता थे राजा शुद्धोदन। शाक्यों का यह छोटा-सा खण्डराज्य वैशाली राज्य के अधीन था लेकिन कार्य के मामले में स्वाधीन था। राज्य में सुख, शांति और प्राचुर्य की सीमा न थी। राजा शुद्धोदन धर्मात्मा थे और न्यायपरायण शासक थे। इन्हीं शुद्धोदन के पुत्र थे गौतम बुद्ध। ज्योतिषियों ने जन्मपत्री देखकर कहा-‘शाक्य-कुलपति, आपका कुमार एक असाधारण पुरुष होगा। यदि ये कभी घर छोड़कर चल देंगे, तो किसी शक्तिशाली धर्म का प्रवर्तन ही होगा। और यदि सांसारिक जीवन में निरत रहा तो यह शिशु राज-चक्रवर्त्ती के रूप में प्रसिद्ध होगा।’ किंतु, आनंद-मुखर कपिलवस्तु में शीघ्र ही एक अशुभ घटना हुई। शिशु जन्म के सातवें दिन जननी माया देवी का देहांत हो गया। राजमहिषी गौतमी बोलीं, ‘आज से सिद्धार्थ का पालन मैं करूंगी।’ पिता के हृदय से एक भारी बोझा उतर गया। शिशु को गोद में लिए शुद्धोदन एक दिन राजपुरी में बैठे थे। इसी समय जटाजूट वाले एक संन्यासी उपस्थित हुए। असित मुनि के नाम से इन्हें लोग जानते हैं। मुनि जब से आए थे तब से एकटक सिद्धार्थ को देख रहे थे। उनकी आंखों के सामने कैसा अनूठा बालक है यह? नीरव निश्चल संन्यासी के कपोल पर पुलकाश्रु बहते जा रहे थे। गद्गद् स्वर में बोल उठे, ‘महाराज आप सचमुच भाग्यवान हैं। आपके इस पुत्र की देह में ईश्वर प्रेरित पुरुष के दुर्लभ लक्षण दिखाई दे रहे हैं। यह कालांतर में चिरस्मरणीय होगा।’



जीवन के उत्तरकाल में अपने शिष्यों को बुद्ध अपने इन दिनों की स्मृति-कथा कहा करते थे। एक युवराज के रूप में उन्हें कई दुर्लभ चीजें भी प्राप्त हुईं। किंतु सांसारिक जीवन की यह सम्पन्नता, भोग विलास के ये सभी उपकरण सिद्धार्थ के लिए तुच्छ, निरर्थक हो जाते थे। इनका मानना था कि यह यौवन, धन-मान का यह गौरव तो दो-दिनों का है। इनसे होकर कभी निरंतर शांति नहीं आ सकती।

विवाहित जीवन के दसवां वर्ष चल रहा था। इसी वर्ष उनका पुत्र राहुल पैदा हुआ। सम्पूर्ण कपिलवस्तु पुत्र जन्मोत्सव के कोलाहल में डूब गया। किंतु सिद्धार्थ के मन में शांति नहीं थी। जीवन का वृहत्तम प्रश्न उनके सामने था। अंतर के अंतस्तल में त्याग-वैराग्य की जो पुकार अब तक बारम्बार सुनाई देती थी, वह इस बार स्पष्टतर हो उठती थी। नवजात पुत्र उनके जीवन में नवीन बंधन बनकर उपस्थित है। इस बंधन को स्वीकृत कर लेने पर मुक्ति की खोज में वे किस तरह निकल पाएंगे? निर्णय

हुआ, वे संन्यास ग्रहण करेंगे। एकांत में बैठकर पत्नी को उन्होंने उस दिन मन की बात बताई। यह तो गंभीर वज्रपात हुआ। बुद्ध ने किसी को कहे बिना चुपचाप कपिलवस्तु की राजपुरी का त्याग किया था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भगवान बुद्ध का जीवन त्याग और समर्पण की प्रतिमूर्ति था।

भगवान बुद्ध के 10 खास उपदेश-

1. दूसरों का बुरा न करें- अपनी प्राण-रक्षा के लिए भी जान-बूझकर किसी प्राणी का वध न करें। जहां मन हिंसा से मुड़ता है, वहां दुःख अवश्य ही शांत हो जाता है।
2. सत्य के बारे में- 3 चीजें ज्यादा देर तक छुपी नहीं रह सकतीं, वे हैं- सूर्य, चंद्रमा और सत्य। जिस तरह सूर्य रोज प्रत्यक्ष दिखाई देता है, चंद्रमा भी दिखाई देता है उसी तरह सत्य कभी न कभी सामने आ ही जाता है। अतः असत्य को अपने आचरण में न उतारें, उससे दूर रहने में ही मनुष्य की भलाई है।
4. प्रेम का मार्ग अपनाएं- बुराई से बुराई कभी खत्म नहीं होती। घृणा को तो केवल प्रेम द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है, यह एक अटूट सत्य है।
5. खुद जैसा औरों को समझें- जैसे मैं हूं, वैसे ही वे हैं, और 'जैसे वे हैं, वैसा ही मैं हूं। इस प्रकार सबको अपने जैसा समझकर न किसी को मारें, न मारने को प्रेरित करें।
6. स्वयं पर विजय- जीवन में हजारों लड़ाइयां जीतने से अच्छा है कि तुम स्वयं पर विजय प्राप्त कर लो। फिर जीत हमेशा तुम्हारी होगी, इसे तुमसे कोई नहीं छीन सकता।
7. दूसरों को सुख दें- मनुष्य यह विचार किया करता है कि मुझे जीने की इच्छा है, मरने की नहीं, सुख की इच्छा है दुःख की नहीं। यदि मैं अपनी ही तरह सुख की इच्छा करने वाले प्राणी को मार डालूं तो क्या यह बात उसे अच्छी लगेगी? इसलिए मनुष्य को प्राणीघात से स्वयं को दूर रखना चाहिए। उसे दूसरों को भी हिंसा से विरत कराने का प्रयत्न करना चाहिए।
8. बैर-भाव न रखें- वैरियों के प्रति वैररहित रहें हों।
9. पशु हिंसा से बचें- पहले तीन ही रोग थे- इच्छा, क्षुधा और बुढ़ापा। पशु हिंसा के बढ़ते-बढ़ते वे और भी बढ़ गए हैं। इनसे दूर रहें।
10. चर्म धारण न करें- सिंह, बाघ और चीते के चर्म को नहीं धारण करना चाहिए। जो धारण करे, उसे दुष्कृत (दुष्कृत) का दोष होता है।'

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हजारों वर्ष बीत जाने के बावजूद भगवान बुद्ध के बताये गए उपदेश आज भी प्रासंगिक हैं, उनके द्वारा दिए गए उपदेशों को आत्मसात करके हम अपना जीवन सार्थक और कल्याणकारी बना सकते हैं।



उसे इंसान कहते हैं

धर्मवीर

कांस्टेबल, सुरक्षा विभाग, मुख्यालय

किसी के काम जो आए, उसे इंसान कहते हैं।

पराया दर्द जो अपनाए, उसे इंसान कहते हैं।

कभी धनवान है इन्सान, कभी इंसान निर्धन है।

कभी सुख है कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है।

यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।

कोई हंस-हंस कर जीता है, कोई जीता है रो-रो कर ॥

जो मुश्किल में न घबराए, उसे इंसान कहते हैं

जो गिर कर फिर संभल जाए, उसे इंसान कहते हैं॥

मनुष्य गलती का पुतला है, जो राहें भी दिखाता है।

जो कर ले ठीक गलती को, वह इंसान कहलाता है॥

किसी के काम जो आए उसे इंसान कहते हैं।

पराया दर्द जो अपनाए, उसे इंसान कहते हैं॥

यों भरने की तो दुनियां में, पशु भी पेट भरते हैं।

जिनमें इंसान का दिल है, वे नर परमार्थ कहते हैं॥

पथिक जो बाँटकर खाए उसे इन्सान कहते हैं।

पराया दर्द जो अपनाए, उसे इंसान कहते हैं।



ग्रीन वाशिंग

मनु शिवशंकर

वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर, बिजली विभाग, मुख्यालय

ग्रीन वाशिंग क्या है:

ग्रीन वाशिंग एक विपणन प्रथा है जो उपभोक्ताओं को यह विश्वास दिलाती है कि उनके उत्पाद पर्यावरण के अनुकूल हैं जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है और इस प्रकार उपभोक्ताओं को गुमराह कर दिया जाता है।

- कॉर्पोरेट कंपनियों द्वारा भ्रामक दावों का वर्णन करने के लिए 1980 के दशक में 'ग्रीनवाशिंग' शब्द गढ़ा गया था। कई कंपनियों का दावा है कि उनके उत्पाद पर्यावरण के अनुकूल हैं और वे अपने उत्पादों को चुनने के लिए उपभोक्ताओं को प्रेरित करती हैं और उन्हें गुमराह करती हैं। उदाहरण के लिए वर्तमान समय में, अधिक से अधिक व्यक्तिगत देखभाल उत्पादों जैसे साबुन, टूथपेस्ट आदि को जैविक के रूप में लेबल किया जाता है। वास्तव में एक गहन शोध से पता चलता है कि उनमें से अधिकांश में कठोर रसायन होते हैं।
- कुछ कंपनियां बायो डिग्रेडेबल, नॉन-टॉक्सिक जैसे शब्दजाल बना देती हैं। कई बायोडिग्रेडेबल उत्पाद टूटने पर शक्तिशाली ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन करते हैं और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं। अधिक से अधिक कंपनियां उपभोक्ताओं में कई तरीकों से भ्रम उत्पन्न कर देती हैं।
- कुछ कंपनियां अपनी कंपनी के कार्बन उत्सर्जन और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली अपनी व्यावसायिक प्रथाओं के बारे में गलत जानकारी देती हैं। कुछ कंपनियां सामग्री को ठीक से सूचीबद्ध भी नहीं करती हैं।
- वर्तमान समय में लोग ग्रीन वाशिंग मार्केटिंग प्रथाओं के बारे में अधिक जागरूक होने लगे हैं और वे ऐसी कंपनियों के उत्पादों को अस्वीकार भी करने लगे हैं। लेकिन सभी ग्रीनवाशिंग रणनीतियों को आसानी से पहचाना नहीं जा सकता।
- सरकार को उन कंपनियों को दंडित करने के लिए कदम उठाने चाहिए।

आप ग्रीनवाशिंग कैसे खोज सकते हैं?

अगर ग्रीनवाशिंग चल रही है, तो कंपनी द्वारा किए जा रहे दावों के समर्थन में अक्सर कोई सबूत नहीं होता है।

कभी-कभी सत्यापित करना कठिन हो सकता है। लेकिन भारत जैसे देश में यह अत्यधिक खतरनाक है क्योंकि यहां उतनी जागरूकता नहीं है तो आसानी से लोगों को गुमराह किया जा सकता है।

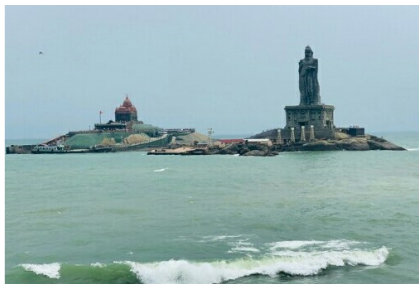
निष्कर्ष:

ग्रीनवाशिंग कपटपूर्ण और अनैतिक है क्योंकि यह उन निवेशकों और उपभोक्ताओं को भ्रम में डालता है जो वास्तव में पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों की तलाश कर रहे हैं। कंपनियों को सिर्फ लाभ पर ध्यान नहीं देना चाहिए। न्याय संगत विपणन तरीकों का पालन करना चाहिए। कई कंपनियां अधिक बिक्री करने के लिए ग्रीनवाशिंग पर इतना पैसा खर्च कर रही हैं। जब उपभोक्ताओं को सच्चाई का पता चलता है, तो ऐसी कंपनियां उपभोक्ताओं का विश्वास खो देती हैं। एक सफल व्यवसाय बनाने के लिए ग्रीनवाशिंग मार्केटिंग प्रथाओं से बचना महत्वपूर्ण है।

कन्याकुमारी यात्रा के दौरान मेरे अनुभव

एस.माया देवी

वरिष्ठ आशुलिपिक, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/कार्यालय/ निर्माण/ चेन्नै एलुंबूर



मैं ने भारत के दक्षिणी शहर-कन्याकुमारी की यात्रा की थी जो एक सुखद अनुभव था। कन्याकुमारी का नाम सुनते ही हमारी कल्पना में जो पहले दिखता है वह सूर्योदय और सूर्यास्त है। लोग चाहते हुए भी इस खूबसूरत दृश्य को भूल नहीं सकते। मेरे परिवारवालों में भी इस सौंदर्य दृश्य को देखने के लिए एक मजबूत जिज्ञासा थी।

उक्त दिन, सीएओ स्तर के रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह के दौरान सीएओ से पुरस्कार प्राप्त करने के तुरंत बाद, मैं कन्याकुमारी एक्सप्रेस में सवार होने के लिए कार्यालय से निकल गई। मेरे पति और बच्चे पहले ही वहां पहुंच चुके थे और मेरा इंतजार कर रहे थे। जब भी मैं रेल गाड़ी में यात्रा करती हूं तो मुझे हमेशा रेलवे कर्मचारी होने का गर्व होता है। मैंने सीएओ पुरस्कार समारोह का बैज नहीं हटाया जिससे रेलवे कर्मचारी के रूप में मेरी पहचान प्रदर्शित हुई। हमें केवल साइड बर्थ मिली, हालांकि हमने यात्रा का आनंद लिया। हमारे सामने के कोच में एक राजनेता के लिए आरक्षण करवाया गया था। इसलिए वहां पर एक पुलिसकर्मी और दो अटेंडरों का दल था। इसकी वजह से हमें अपनी इच्छानुसार रहने में थोड़ी परेशानी थी। जब कभी हम ट्रेन में यात्रा करते हैं तो मेरे बेटे के पास हमेशा कई सारे सवाल होते हैं। उसके सवालों का जवाब देते-देते समय भी बीत जाता है। मेरी बेटी खिड़की की सीट का आनंद ले रही थी। हमने रात के खाने में चिकन बिरयानी खाए और अपनी बर्थ पर लेट गए। यह एक अस्थिर नींद थी, गाड़ी 23.00 बजे तिरुच्चिरापल्ली पहुंची। हमने एक अच्छी कॉफी पी और वापस कोच में आ गए।

सुबह जब गाड़ी तिरुनेलवेली पहुंची तो राजनेता उतरे और हमें अतिरिक्त सीटें मिलीं। निकटवर्ती पश्चिमी घाटों का दृश्य देखना हमारे लिए बहुत मनोरम था। गाड़ी नागरकोविल पहुंची और हमने वहां कॉफी पी और जब गाड़ी नागरकोविल से निकली तो रोमांच बढ़ गया। विशाल पवन चक्कियां कभी भी हमारी आंखों के ध्यान से बच नहीं पाती थीं। तब नारियल के पेड़ों के एक बगीचे ने हमारा मन लुभा लिया। चेन्नै का प्रदूषण भरा, शोरशराबा वाले व्यस्त जीवन से हटकर इस सुंदर शहर की प्राकृतिक हरियाली को देखने के बाद मन एकदम शांत हो गया। गाड़ी कन्याकुमारी स्टेशन पर रुकी, स्टेशन उतना पॉलिश नहीं था जितना हमारा सेंट्रल स्टेशन है। हम हॉलिडे होम पहुंचे, सुबह की छुट्टियां मनाई और शहर घूमने के लिए तैयार हुए। हमारे लिस्ट में पहला स्थान स्वामी विवेकानंद रॉक था। हमें दो घंटे तक लंबी कतार में खड़ा रहना पड़ा। हमने नाव के माध्यम से स्वामी की चट्टान तक पहुंचने के लिए यात्रा की। यहां स्वामीजी तीन दिनों तक ध्यान मग्न थे। जब मैंने मंदिर में प्रवेश किया तो एक आध्यात्मिक आभा का एहसास मुझे हुआ- कैसे एक साधारण व्यक्ति ने पूरी दुनिया को विनम्र और प्रेरणादायक होने के लिए प्रेरित किया था। चट्टान से तीन समुद्रों का संगम देखना हमारे लिए एक रोमांचकारी अनुभव था।

अगली जगह थी नवनिर्मित भगवान वेंकटेश्वर का बालाजी मंदिर। जब मैंने मंदिर में कदम रखा तो मेरा मन बहुत उत्सुक था। समुद्र के किनारे इतना मन मोहक दृश्य था कि मैं चाहती थी कि पूरे

दिन वहीं रहें। लेकिन हमें अगला स्थान जाना था। इसलिए हम भगवान वेंकटेश्वर बालाजी का दर्शन लेकर अगले स्थान के लिए निकले।

यह शाम थी, मेरा पूरा परिवार अद्भुत दृश्य की प्रतीक्षा कर रहा था - सूर्यास्त। हम 17.00 बजे तक समुद्र तट पर पहुंच गए और सूर्यास्त देखने के लिए अति उत्सुक थे। लहरें ब्रीज़ की धुन पर नाच रही थीं, बच्चे खुशी से खेल रहे थे। मेरे बच्चों ने समुद्र तट से कंकड़ एकत्र किए। सूर्यास्त की झलक देखने के लिए चट्टानों पर चढ़ते हुए हर कोई मोबाइल, कैमरे के साथ तैयार था। सूरज नीचे आ रहा था, क्षितिज पर। आह! क्या दृश्य! ऐसा लग रहा था जैसे समुद्र सूरज को अपने मुंह में निगल रहा है। आगंतुकों ने तालियां बजाईं, सीटी बजाई और इस अनूठे दृश्य को देखकर चारों ओर कूद गए। धन्य था वह क्षण। यह एक शानदार दिन था।

अगले दिन हम महान पद्माभस्वामी पैलेस के लिए रवाना हुए। मेरे बच्चों ने राजा और रानी के शाही जीवन की जानकारी ली। कई प्राचीन चीजें थीं - गहने और बर्तन। एक बड़ा हॉल था जहां लगभग 1000 लोग एक ही समय में बैठकर खाना खा सकते थे। विदेशी आगंतुकों के लिए एक अलग आउटहाउस बनाया गया था। पूरे महल का दौरा करने में आधा दिन लग गया। मेरे बेटे को महल के इतिहास और त्रावणकोर के राजा के बारे में पढ़ने में बहुत दिलचस्पी थी। राजा मार्तंड वर्मा ने अपने परिवार की देवता श्री पद्मनाभस्वामि को राज्य समर्पित किया, जो भगवान विष्णु का एक रूप हैं और पद्मनाभ दास या भगवान पद्मनाभ के सेवक के रूप में राज्य पर शासन किया। इसलिए इसका नाम पद्मनाभपुरम या भगवान पद्मनाभ की नगरी पड़ा। महल परिसर पारंपरिक केरल वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक है। हालांकि, महल पूरी तरह से तमिलनाडु राज्य से घिरा हुआ है फिर भी केरल का हिस्सा है और भूमि और महल केरल सरकार का है। इस महल का रखरखाव पुरातत्व विभाग द्वारा किया जाता है।

महल का दौरा करने के बाद, हम 'थोट्टी पालम' नामक एक पुल देखने गए जिसे तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कामराज द्वारा पहरुली नदी पर 'सूखे से राहत उपाय' के रूप में बनाया गया था। इसका उद्देश्य सिंचाई के लिए पानी को एक पहाड़ के ऊंचे स्तर से दूसरे पहाड़ तक ले जाना है। चूंकि समय कम था इसलिए हमने पुल पर थोड़ा समय बिताया और अगले स्थान के लिए रवाना हुए।

अंतिम स्थान तिरपरप्पू फॉल्स था। पहाड़ से भारी मात्रा में पानी बह रहा था। लगातार हो रही बारिश से इलाके में पानी भर गया था। मेरे पति साहसपूर्वक पहले गए। कई लोग झरने के नीचे स्नान कर रहे थे। उसके बाद, मेरा बेटा भी स्नान करने गया। मेरी बेटी पहले हिचकिचाती थी, लेकिन बाद में वह डरी-सहमी सी अपने पिता के साथ चली गई। मैंने तस्वीरें लीं और गरजते झरने का आनंद लिया। हम आनंद में इतने डूबे हुए थे कि हम समय को नोटिस करना भूल गए। उस समय दोपहर के लगभग 3 बज रहे थे। चेन्नै के लिए हमारी गाड़ी कन्याकुमारी से 17.00 बजे को थी। लेकिन हम कन्याकुमारी स्टेशन से 60 किलोमीटर दूर थे।

हमारे ड्राइवर ने कई कॉल किए थे, लेकिन झरने की शोर के कारण हम फोन कॉल नहीं सुन सके। अधिकारियों ने आगंतुकों को चेतावनी दी कि पानी भारी मात्रा में बह रहा है और जगह खाली करने की सलाह दी। इसके बाद ही भीड़ तितर-बितर हुई। हम दोपहर 3.30 बजे वहां से निकले। हमारे ड्राइवर ने चेतावनी दी कि हम कन्याकुमारी में समय पर पहुंच नहीं सकते और गाड़ी पकड़ नहीं सकते। लेकिन हमने अपना सामान हॉलिडे होम में ही रख दिया था। मेरे पति ने मुझे नागरकोविल में बच्चों के साथ ट्रेन में चढ़ने के लिए कहा और बोले कि वे अगले दिन सामान लेकर बस से आएंगे। मैंने

कभी अकेले यात्रा नहीं की थी, इसलिए यह आइडिया मुझे अच्छा नहीं लगा। हमारे ड्राइवर ने हमारी मदद की, भगवान का शुक्र है कि हमारा हॉलिडे होम स्टेशन से बहुत सटा हुआ था। मैंने केयर टेकर को फोन किया और उससे हमारा सामान ऑटो ड्राइवर को देने के लिए कहा ताकि वह उसे ट्रेन के आखिरी कोच में रख सके। उन्होंने अपना काम बखूबी किया। हम नागरकोविल में सुरक्षित रूप से गाड़ी में चढ़ गए, सामान इकट्ठा किया और अगली सुबह चेन्नै पहुंचे। मैं इस साहसिक घटना को कभी नहीं भूल सकती हूं।



बिजी राजा को कबूतर संदेश लेकर आया था,
राजा ने देखा कि उसके पैर नहीं
वह सोचने लगा कि क्यों
और कोई संदेश भी नहीं लाया
मंत्री ने कहा कि यही मिस्ड काल है

मैं अब अकेला नहीं हूँ सैकड़ों लोग मेरे पीछे हैं
कोई हमें रोक नहीं सकता
हमें न खुद के न परिवार के बारे में कोई चिंता है
समझते नहीं, अब मैं तो मदिरालय के सामने हूँ

पत्नी- ओ प्रिय, आज तो हमारा वेडिंग डे है क्या करें?
पति- दो मिनट मौन धारण करेंगे

मौसम चाहे बदलते रहे
पर यादों के फूल जरूर खिलेंगे
समय बदलेंगे, रिश्ते बदलेंगे
पर यादों के फूल जरूर खिलेंगे॥

मेरा नाम अदायब महमूद है। मैं पास के नाले के पार जो फैक्टरी है उस में मैनेजर हूं। अच्छी खासी तनख्वाह मुझे मिल जाती है। कभी-कभी तो समय से पहले भी तनख्वाह आ जाती है। फैक्टरी के सामने एक टी-स्टॉल है जहां पर सुबह से ही फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों का एक टोला रोज आकर बैठ जाता है। मुझे जब भी चाय पीने को मन करता तो इसी टी-स्टॉल पर चला जाता हूं। ऐसा कभी-कभार होता है कि मुझे चाय पीने के बहाने फैक्टरी के बाहर आना होता है।

आज सुबह से ही घने बादल छाए हुए हैं। ठंडी-ठंडी हवाएं मद-मस्त तरीके से चल रही हैं। मौसम काफी खुशगवार है। जब मैं फैक्टरी के लिए निकला, तो हल्की बारिश होना शुरू हो चुका था। फैक्टरी के गेट पर रोज की तरह आज भी मजदूरों की भीड़ लगी है। जैसे ही गेट के पास मेरी कार आई तो, सभी उठ खड़े हुए। एक तरफ हटते हुए उन्होंने मेरी कार को अंदर जाने का रास्ता दिया। मेरी कार में काले ग्लास लगे हैं, जिसमें बाहर से नहीं देखा जा सकता कि अंदर कौन बैठा है? रोज की तरह आज भी मैं उन लोगों को बिना देखे आगे बढ़ गया। लेकिन उन लोगों को पता था कि यह कार मैनेजर की है।

कभी-कभी क्या होता था कि, फैक्टरी में अतिरिक्त मजदूरों की जरूरत आ पड़ती थी तो ठेकेदार को बाहर से अतिरिक्त मजदूरों को लाने के लिए कहा जाता था। आज भी कुछ शायद ऐसा ही हुआ होगा। दिन के लगभग 11 बजे मेरा मन किया कि बाहर की टी-स्टॉल पर जाकर चाय पी जाए। उस स्टॉल की चाय का मजा ही कुछ और था। वैसे तो हमारी बेगम बाहर के कुछ भी खाने पीने के सख्त खिलाफ है, किंतु कभी-कभी मैं बाहर भी कुछ ना कुछ खा लिया करता हूं जिसका आज तक हमारी बेगम को पता नहीं है। खैर आशा करता हूं कि आप भी नहीं बताएंगे।

जैसे ही मैं टी-स्टॉल पर पहुंचा, दुकानदार बोला- अरे सर, मैं केबिन में ही चाय पहुंचा देता। आपने आने की तकलीफ क्यों की।

“अरे कुछ नहीं ताराचन्द भाई, सोचा आज गर्मा-गर्म चाय दूकान पर ही आकर पी जाए।”

“ठीक ही किया आपने, इसी बहाने कम से कम आप के दर्शन तो हो ही जाते हैं।”

“आप बस दो मिनट का इंतजार करें, मैं अभी चाय बना देता हूं। उसने अंदर से एक साफ सुथरी कुर्सी मेरे लिए लाकर रखते हुए पूछा – “वैसे सुना है आप का प्रमोशन होने वाला है।”

“सुना तो है पर कब होगा ये अभी भी ठीक से पता नहीं चला है। पर जल्द ही हो जाएगा।”

“तब तो आपकी सेलरी भी बढ़ जाएगी।” ताराचन्द ने चाय का कप मेरे सामने रखते हुए कहा।

हम्म। मैंने चाय की एक चुस्की ली और अपने चारों तरफ एक नज़र दौड़ाई।

“अगर आप बुरा न माने तो, एक बात पूछूं।”

इससे पहले की ताराचंद कुछ पूछ पाता मेरी नज़र सामने से आते हुए एक मजदूर पर टिक गई। मजदूर जो शायद मेरी फैक्टरी में ही काम करता है, टी-स्टॉल पर आया। उसकी उम्र लगभग 55 के आस-पास की होगी। उसने एक कप चाय मांगी और एक 5 रुपये वाला बिस्कुट का पैकेट। वह चाय में एक-एक बिस्कुट भिगोकर खाने लगा। थोड़ा निराश था। थका था। बहुत शांत था वह। ऐसा लग रहा था कि आज भी जिंदगी को जोरदार टक्कर देने के लिए खड़ा था। जैसे-जैसे वह चाय की चुस्की लेता,

उतना ही उसका जोश बढ़ रहा था। तभी उसके पास एक और मजदूर आकर बैठ गया। उसने बोला कि उन दोनों की मजदूरी को 80 रुपये से बढ़ाकर 90 रुपये कर दिया गया है।

दोनों बहुत ही खुश थे। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर कैसे ये लोग सिर्फ 80 रुपये में अपना काम चला रहे हैं?

जितना आनंद उन दोनों को चाय पीते हुए आ रहा था, शायद उतना मुझे नहीं। मैं बेचैन हो उठा। जल्दी से उठा और अपने केबिन में चला गया। वहां पर मैंने अपनी खिड़की से फैक्टरी में काम कर रहे उन मजदूरों को देखा जो बिना अपनी फिक्र किए कड़ी मेहनत कर रहे थे। मैंने एकाउंटेंट को बुलाया।

“जी सर।” एकाउंटेंट ने केबिन के अंदर घुसते हुए कहा।

“आइए शर्मा जी।” मैंने उसे बैठने का इशारा किया।

“हमारी फैक्टरी में जो ठेकेदार हैं, उसने किस सैलरी अमाउंट पर मजदूरों को रखा है।”

“जी, 250 रुपये प्रति मजदूर के हिसाब से।”

“लेकिन मजदूरों को तो सिर्फ 80 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से दिया जा रहा है।”

“नहीं तो सर। आपको किसने बोला।” एकाउंटेंट का चेहरा एक दम से पीला पड़ गया। मैं समझ गया था कि कंपनी में कुछ ना कुछ बड़ी गड़बड़ी हो रही है।

मैंने फिर से खिड़की की ओर देखा और उस मजदूर को एक भारी सामान उठाते देखा जिसने अभी मेरे साथ टी-स्टॉल पर चाय पी थी। मैं बिना कोई देरी किए मजदूरों के बीच पहुंच गया। उनमें से पांच मजदूरों को अपने पास बुलाया।

“तुम लोगों को अभी कितनी सैलरी मिल रही है?”

वे सब एक दूसरे की तरफ ताकने लगे।

“उनमें से एक ने पूछा कि मैं कौन हूं।”

जब मैंने उस मजदूर के मुंह से ऐसी बात सुनी तो मेरी आंखें खुली की खुली रह गईं। ये लोग मुझे नहीं जानते। जानते भी कैसे, कभी इन लोगों के बीच गया तक नहीं था।

“मैं आप लोगों का मैनेजर हूं। अब बताओ तुम लोगों की सैलरी कितनी है?”

“जी 80 रु. प्रतिदिन के हिसाब से। अगर काम हुआ तो ठीक है, वरना बैठो अपने घर।”

“सिर्फ 80 रु.!!!!!!”

“जी सर।”

ठीक है आप सभी को दिवाली को तौहफा दिया जाता है। आज से आप सभी की सैलरी 300 रु. होगी। मेरा इतना ही कहना था कि चारों तरफ खुशी की लहर दौड़ गई। उनमें से एक जोर से चिल्लाया – अरे सुन रहे हो, ये बाबू साहब जो कि खुद को हमारा मैनेजर बता रहा है, हमारे साथ कितना धिनौना मजाक कर रहा है।

“नहीं, ये सच बोल रहे हैं, ये हमारे मैनेजर साहब ही हैं।” उस भीड़ में एक ने दूसरे को कहा। फिर सब हँसते हुए चले गए जैसे मैंने कोई जोक मारा हो।

महीने की पहली तारीख को सबकी सैलरी 300 रु. थी। जब मेरी कार गेट पर पहुंची तो सब हाथ जोड़कर खड़े थे। शायद मैं उनके लिए खुदा बन चुका था। मैंने ठेकेदार और एकाउंटेंट को उनके घर पर बैठा दिया। किसी अच्छे पद पर हो तो, नीचे के पद वालों से मिलते रहना चाहिए। खासकर उनसे, जो शायद आपको अपने जीवन का खुदा समझते हों।

रामायण से संबंधित कुछ रुचिकर तथ्य

एस.बालसुब्रमणियन

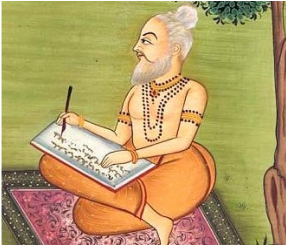
वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

मनुष्य अलग-अलग समय के लिए अलग-अलग प्रकार की यादें बनाए रखता है। अल्पकालिक यादें वे हैं, जो सेकंड से घंटों तक रहती हैं, जबकि दीर्घकालिक यादें वर्षों तक चलती हैं। हमारे पास एक क्रियाशील स्मृति भी है, जो हमें किसी चीज़ की यादों को दोहरा कर सीमित समय के लिए हमारे दिमाग में रखने देती है। जब भी आप किसी नाम/वस्तु/स्थान को याद रखने के लिए उसे बार-बार कहते हैं तो आप अपनी क्रियाशील मेमोरी का उपयोग कर रहे हैं।

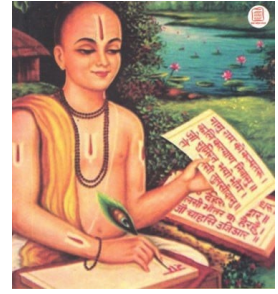
मैं इस लेख में पाठकों को रामायण के कुछ ऐसे नाम/वस्तु/स्थानों की याद दिलाना चाहता हूँ जिसे पढ़ते या सुनते ही आप को उससे संबंधित यादें आ जाती होंगी।

आइए.....

रामायण और महाभारत हमारे महाकाव्य हैं। जब कभी हम इनका नाम सुनते हैं तो हमें इनके मुख्य पात्रों की याद तो जरूर आती है, साथ में कुछ अन्य वस्तुओं की भी याद आती है। मैं उन पर ही जोर देना चाहता हूँ।



रामायण वाल्मिकी महर्षि द्वारा संस्कृत में लिखा गया काव्य है और उसके बाद तुलसीदास द्वारा स्थानीय भाषा अवधी में लिखी रामचरित मानस उत्तर भारत में बहुत ही मशहूर है जो प्रत्येक घर में अवश्य रहता है।



रावण एक महान ब्राह्मण है और दस सिरों वाला राक्षस राजा है। उसके दस सिर छह शास्त्रों और चार वेदों के उनके ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं। माना जाता है कि जब रावण ने भगवान शिव और पार्वती का अपमान किया तब नंदीदेव ने रावण को शाप दिया कि वानर उसका सर्वनाश करेंगे। लक्ष्मण द्वारा अपनी बहन शूर्पणखा की नाक काटे जाने पर रावण कोधित होकर श्रीराम की पत्नी सीता का अपहरण करता है और उसके बाद की कथा आप सब जानते हैं।

आईए संक्षेप में देखेंगे रामायण के कुछ परिवारों के बारे में—

❖ रावण का परिवार

- रावण की पत्नियां: मंदोदरी, धन्यमालिनी
- पुत्र: मेघनाथ, इंद्रजीत, अतिकाय, अक्षयकुमार, नरांतक, देवांतक, त्रिशिरा, प्रहस्त
- पुत्री: सुवर्णमत्स्य
- रावण के भाई: कुबेर, विभीषण, कुम्भकर्ण, अहिरावण, खर और दूषण।
- रावण की बहन: शूर्पणखा और कुम्भिनी।
- रावण के दादा-दादी : पुलस्त्य और हविर्भुवा।
- रावण के नाना: माल्यवन।
- रावण के माता-पिता – विश्रवस और कैकशी।
- सरमा : विभीषण की पत्नी।

- वज्रज्वाला : कुंभकर्ण की पत्नी।
- सुलोचना : मेघनाथ की पत्नी।

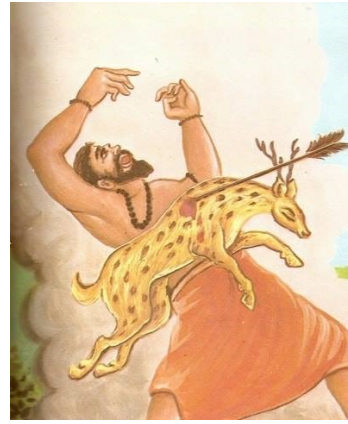
❖ वानरों का परिवार

- वाली:किष्किंधा का राजा
- सुग्रीव: वाली का छोटा भाई
- तारा:वाली की पत्नी
- रुमा:सुग्रीव की पत्नी
- अंगद : वाली का पुत्र

अब हम इस रामायण के कुछ वस्तु/स्थान/व्यक्ति/पशु-पक्षी आदि के बारे में देखें जिनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

स्वर्ण मृग:-

स्वर्ण मृग का नाम सुनते या चित्र को देखते समय हमारे मन में मारीच की याद आती है। वह एक राक्षस है और रामायण में उसका पात्र बहुत महत्वपूर्ण है जिसका भगवान राम ने वध किया था। मरते हुए मारीच ने राम की आवाज में हे सीता, ओह लक्ष्मण कहकर चिल्लाया। सीता के कहने पर जब लक्ष्मण उनकी रक्षा करने निकला तभी रावण ने एक साधु के रूप में आकर सीता का अपहरण कर लिया था। यह एक महत्वपूर्ण कड़ी है।



संजीवनी पर्वत :-

जब लक्ष्मण जी मूर्छित हो गये थे, उस समय उनके जीवन को बचाने के लिए हनुमान जी पूरा का पूरा पर्वत उठाकर ले आए थे। आयुर्वेद में इसके औषधीय लाभों के बारे में वर्णन है।



"पुष्पक विमान"

इस विमान में बहुत सी विशेषताएं हैं, जैसे इसका आकार आवश्यकतानुसार छोटा या बड़ा किया जा सकता था। कहीं भी आने जाने हेतु इसे मन की गति से चलाया जा सकता था। यह विमान अपने स्वामी की इच्छानुसार गति और दिशा चुन सकता था।



लक्ष्मण रेखा

लक्ष्मण द्वारा खींची गई यह रेखा सर्वप्रसिद्ध थी जिसे वन में श्रीराम की सहायता के लिए जाने से पहले अपनी भाभी सीता की रक्षा के लिए लक्ष्मण ने खींचा था। रेखा के पार होने पर क्या हुआ वह तो काव्य है।



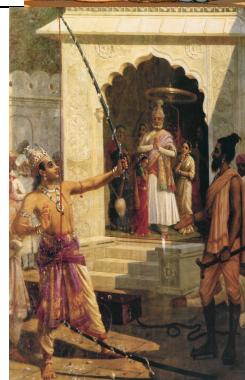
गिलहरी

माना जाता है कि लंका जाने हेतु पुल के निर्माण में मदद करने के लिए गिलहरी बार-बार शरीर पर बालू लपेटकर उसे पुल पर गिराती थी। गिलहरी की पीठ पर भगवान श्रीराम ने प्यार से अंगुलियां दौड़ाई और वे ही चिह्न बनकर गिलहरी की पीठ पर रह गए।



पिनाक धनुष

सीता स्वयंवर में इसी धनुष को मर्याता पुरुषोत्तम श्रीराम ने तोड़कर सीता जी से विवाह किया था। श्री राम ने जिस धनुष को तोड़ा था वह भगवान शंकर का धनुष था और उसका नाम पिनाक था।



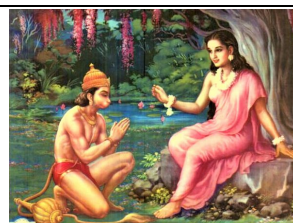
श्रीराम की बहन

श्री राम के तीन भाई थे, यह हम सब जानते हैं, लेकिन इसके अलावा उनकी एक बहन भी थी। उनकी बहन का नाम शांता था। शांता अपने चार भाइयों से बड़ी थी।



अंगूठी :

श्री राम ने अंगूठी उतार कर हनुमान को दिया और कहा कि जब तुम इसे सीता को दोगे तो वह पहचान जाएगी कि तुम मेरे ही दूत हो। ठीक यही हुआ।



पाठकों को मेरे इस लेख को पढ़ते समय रामायण से संबंधित और भी कई विषयों या वस्तुओं की याद आए तो मैं प्रसन्न होऊंगा। जीवन में छोटी चीजों का भी अपना महत्व होता है।

गोदान में चित्रित धनियाँ का चरित्र चित्रण

एन.चित्रा

वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

भूमिका

प्रेमचन्द्र जी द्वारा लिखा गया उपन्यास 'गोदान' एक बहुत लोकप्रिय उपन्यास है। पश्चिम के उपन्यासकार टॉलस्टाय कृत War and Peace की तुलना में गोदान छोटा उपन्यास है। किन्तु भारत में यह उपन्यास अत्यंत विशाल उपन्यास माना जाता है जिसमें प्रेमचन्द्रजी ने तीन पीढ़ियों का वर्णन किया है। एक पीढ़ी में होरी, रायसाहब, दातादीन. धनिया जैसे लोग आते हैं। दूसरी पीढ़ी में युवक वर्ग गोबर, उनका पुत्र आता है। तीसरी पीढ़ी में गोबर का बेटा आता है। गोदान में मूल रूप में किसानों के शोषण की समस्या को उठाया गया है। सम्पूर्ण उपन्यास में होरी का चरित्र एक शांत, सीधे-साधे किसान के रूप में उभरकर आता है, वहीं दूसरी ओर धनिया स्पष्टवादिनी, निर्भीक, कलहप्रिय नारी के रूप में उभरती है। उसकी इसी विशेषता को देखकर रामविलास शर्मा का कथन है- "वह ऊपर से कठोर है। लेकिन हृदय बहुत कोमल है। प्रेमचन्द्र के नारी पात्रों में वह अनन्यतम है। उसके बराबर न और कोई परिश्रम करनेवाली है न और किसी पर सरस्वती की ऐसी कृपा है।"

धनिया के चारित्रिक विशेषताएं

जब गोबर के कारण झुनिया गर्भवती होती है और होरी के घर पहुंचती है तो वह उसे अपने साथ रख लेती है। उसका मातृत्व जाग उठता है। होरी जब धनिया से कहता है कि झुनिया को घर से निकाल दो तब धनिया गुस्से में आकर होरी से कहने लगती है-

'देखो तुम्हें मेरी सौह। उस पर हाथ न उठाना। वह तो आप ही से रही है। भाग, खोता न होता तो यह दिन क्यों आता।"

जब झुनिया कहती है मेरे भाई मुझे खा जाये तो धनिया कहती है - "तू चल घर में बैठो, मैं देख लूँगी काका और भैया को।"

जब भोला आकर कहता है कि मेरे पैसे वापस करो, अगर पैसे नहीं हैं तो झुनिया को घर से निकाल दो या फिर अपने बैल मुझे दे दो। झुनिया आप ही घर छोड़कर जाने को तैयार हो जाती है। तब धनिया कहती है -

"तू कहाँ जाती है बहू, चल घर में, यह तेरा घर है, डूब मरे वो जिसे संतानों से बैर है, ले जा बैलों का रक्त पी।"

झुनिया से मातृत्व प्रेम होने के कारण धनिया उसे घर में रख लेती है। मातादीन, सिलिया से प्रेम करता है और अंत में सिलिया का हाथ छोड़ देता है। तब धनिया अपनी उदार भावना के कारण दयावश होकर सिलिया को घर में रख लेती है।

धनिया कहती है-"जगह की कौन कमी है बेटी। तू मेरे घर रह"। तब होरी कहता है कि पीड़ित होड़कर नहीं, तब धनिया कहती है- "बिगड़ेगी तो एक रोटी कैसे खा लेंगे और क्या करेंगे। उसकी इज्जत ली। बिरादरी से निकाल अब कहते हैं मेरा तुमसे बसता नहीं है। पहले नहीं सोच लिया था। तब बिहार करते रहे अब कहते हैं। मुझसे कौन वास्ता।"

स्पष्टवादिनी एवं सत्यनिष्ठ: धनिया स्पष्टवादिनी एवं सत्यनिष्ठ है। जब होरी की पांच बीघा जमीन चली जाती है तो वह अपने पूरे परिवार के साथ दातादीन के खेतों में मज़दूरी करती है। दातादीन उन सब पर चिल्लाता है कि तुम दाने-दाने के लिए मोहताज हो, तब धनिया कहती है कि हम तुम्हारे घर भीख माँगने नहीं आते। हातादीन कहना है कि ऐसा हाल रहा तो भीख भी मांगोगी। तब धनियाँ कहती है "भीख माँगे तुम, जो भिखमंगों की जात का हो, हम मजदूर हैं। जहाँ काम करेंगे, वहीं चार पैसे आएंगे।"

होरी खलिहान का लगभग सारा अनाज पंचायत को दे आता है। जब डेढ़ - दो मन जौ रह जाता है तो धनिया उसका हाथ पकड़ लेती है। जब होरी, फिर पंचों से न्याय, दयाभाव आदि में अपनी आस्था प्रकट करता है तो धनिया तिलमिला उठती है। वह सच्चाई को जानती है इसलिए कहती है

'यह पंच नहीं है- राक्षस हैं। पक्के राक्षस, यह सब हमारी जमीन छीनकर माल मारना चाहते हैं। दण्ड तो बहाना है '

निडर एवं आत्मसम्मानि

धनिया अपनी इसी विशेषता के कारण 'गोदान' उपन्यास में नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। जब सोना का विवाह बगलवाले गाँव के एक धनी किसान के बेटे से तय हो जाता है, तब सोना अपने घर की परिस्थितियों को देखकर अपने ससुर को पत्र लिखती है कि दहेज का इन्तजाम हम नहीं कर सकते। सोना के ससुर होरी को पत्र लिखते हैं कि हमें सिर्फ लड़की चाहिए। होरी खुश हो जाता है, पर धनिया स्वाभिमानी होती है और कहती है -

"यह तो महतो की भलमनसी है, लेकिन हमें तो अपनी मरजाद का निवाह करना है। रुपया तो हाथ का मैल है। कुल मरजाद को छोड़ा नहीं जा सकता। जो हमसे हो सकेगा हम देंगे।"

धनिया निडर भी है वह किसी से डरती नहीं। वह दातादीन को भी जवाब देती है कि - "भीख मांगो, तुम भिखमंगों की जाती का हो, हम मजूर हैं, जहाँ काम करेंगे। वहीं, चार पैसे पाएंगे।"

जब हीरा होरी की गाय को जहर देकर मार डालता है तब दारोगा हीरा के घर की तलाशी लेने की बात कहता है। तब होरी अपने घर की मर्यादा की रक्षा करने के लिए झिंगुरी सिंह से रुपये सूद पर लेता है और दारोगा को देने जाता है। उसी समय धनिया होरी पर गुस्सा करते हुए कहती है - 'घर के परानी दिन रात मरे और दाने- दाने को तरसे लता पहनने को मयस्सर हो, और अंजुली भर रुपये लेकर चला है, इज्जत बचाने"

फिर धनिया दारोगा से भी लड़ाई करती है और कहती है- 'देख लिया तुम्हारा न्याय और तुम्हारे अकल की दौड़। गरीबों का गला काटना दूसरी बात है दूध का दूध और पानी का पानी करना दूसरी बात।'

संघर्षशील एवं कर्मठशील: धनिया मात्र छत्तीस वर्ष की होती है। किन्तु गृहस्थी की चिन्ताओं और पौष्टिक भोजन के अभाव में उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गये थे, तथा सारे बाल पक गये थे। धनिया का होरी से विवाह हुए बीस पतझड़ बीत चुके थे। किन्तु इन बीस वर्षों में वह न तो कभी पेट भर खा सकी और न उसे तन पर पहनने के अच्छे कपड़े मिले। वह अपने देवर- शोभा और हीरा को अपना तन और पेट काटकर पालती है। उनके विवाह हो जाने पर उनकी बहुओं को उतरन पहन कर गृहस्थी की डाँवाडोले नौका को किसी प्रकार पार लगाने का प्रयास करती है।

वह होरी सा साथ अंतिम समय तक देती है। जब वह दातादीन के खेतों में मजदूरी करती है, वहाँ भी वह होरी को पूरा सहयोग देती है। झुनिया और सिलिया के कारण सारी बिरादरी उनसे मुंह मोड़ लेती है पर धनिया बिरादरी की परवाह नहीं करती।

मर्यादा और परम्परा का निर्वाह करने वाली: धनिया यद्यपि अपेक्षाकृत नीची जाती की नारी है, किन्तु उसका यौवन संबंधों विषयक दृष्टिकोण जिस सीमित अर्थ में पतिव्रत्य कहा जा सकता है, बड़ा ही उदात्त और भव्य है। उसने किसी पर-पुरुष की ओर आँख उठाकर नहीं देखा। वह नारी मर्यादा को जानती है। सभी परिस्थितियों में पति का साथ वह नहीं छोड़ती। बहुत ही छोटी उम्र में उसका विवाह होरी के साथ हुआ था। तब से वह उसके दुख-सुख में सहभागी रही है।

सेवा भाव एवं पतिव्रता :- धनिया होरी के स्वास्थ्य को लेकर हमेशा चिन्तित रहती है। जब भी होरी अपनी मृत्यु की बात करता है तो वह उसे स्नेह से डाँटे बिना छोड़ती नहीं थी। जब होरी बिना रसपान किए ही जमींदार से मिलने चले जाता है तो धनिया वहाँ पर खड़ी अपने पति को स्नेह से निहराती हुई विदा करती है।

प्रेमचन्द्र जी ने लिखा है अपने नारित्व के सम्पूर्ण तप और व्रत से अपने पति को अभय-दान दे रही थी। विपन्नता के इस अथाह सागर में सुहाग ही वह तृण था जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। जब होरी सारे गाँव के सामने धनिया को मारता है तब से धनिया होरी से बोलना छोड़ देती है। पर जब भी होरी लंबे समय तक बीमार पड़ जाता है तब धनिया बीती बातों को भूलकर उसकी सेवा में लग जाती है। पटेश्वरी जब उसे टोकता है तो उसे मुंह तोड़ जवाब देते हुए कहती है – ‘पति जब मर रहा है तो कैसा वैर, लाख बुरा हो, पर उसके साथ जीवन के पच्चीस साल काटे हैं, अब तो चाहे अच्छा हो या बुरा हो, है तो अपना।’

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि होरी के साथ जीवन के पच्चीस वर्ष गुजारनेवाली धनिया उस समय अलग हो जाती है जब होरी की मृत्यु हो जाती है। उसे झूठ एवं दम्भ से हमेशा घृणा रही। वह जीवन पर्यन्त मानवता को सबसे बड़ा गुण मानती है। होरी के साथ पच्चीस वर्षों में कोई सुख नहीं देखा। 36 वर्ष की आयु तक आते-आते सुन्दर गेहुआं रंग, सांवला पड़ जाता है। मुख पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। बाल पक जाते हैं। फिर भी होरी उनमें पच्चीस वर्ष पहले की अबोध बालिका का ही दर्शन करता है, जब ब्याह करके होरी के घर आयी थी। उसने बिना किसी शिकायत के होरी के भाइयों को पाला और उनका विवाह भी करवाया। किन्तु वही भाई बाद में उसे तिरस्कार करते हैं। यही नहीं, जिस गर्भवती झुनिया को वह अपनी बहु के रूप में स्वीकार करती है, जिसके लिए वह समाज एवं बिरादरी से इगड़ा मोल लेती है, वही उसे बहुत सी बातें सुनाते हुए गोबर के साथ शहर चली जाती है। तब धनिया अंदर ही अंदर टूट जाती है और अपने पति के लिए दुःखी होती है। होरी का संबंध उसे जीवन देता है किन्तु होरी की मृत्यु उसके जीवन की हार है और वह टूट कर बुरी तरह बिखर जाती है। धनिया का चरित्र करुणा से भरी हुई ऐसी नारी का चरित्र है जो वर्षों तक पाठकों के हृदय को उत्तेजित करता रहेगा।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक – 28.12.2022



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक – 05.01.2023





पत्रिका

क्या खाएं, क्या न खाएं पुस्तिका का विमोचन

हिंदी में काम करने की सबकी जिम्मेदारी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

चेन्नई, दक्षिण रेलवे की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक कोशल किशोर, अपर महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे की अध्यक्षता में संपन्न हुई। गौतम दत्त, प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी ने सभी का स्वागत किया और हिंदी के कार्यान्वयन की आवश्यकता एवं तरीके बताए।

कोशल किशोर, अपर महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे ने स्वास्थ्य विषय पर बने सहायक साहित्य का विमोचन किया जिसकी पहली प्रति चिकित्सा विभाग के प्रतिनिधि डॉ. यू.के.पेरुमाल, मुख्य स्वास्थ्य निदेशक ने प्राप्त की। इसमें मुर्मू रोगी, उच्च रक्तचाप रोगी,



मधुमेह रोगी आदि के आहार नियमों का विवरण है। कोशल किशोर ने बताया कि क्या खाएं, क्या न खाएं पुस्तिका समय की मांग है। मनु शिवशंकर को रेलवे बोर्ड के व्यक्तिगत नकद पुरस्कार प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। धारा 3(3) के शत प्रतिशत अनुपालन पर जोर देते हुए मुख्यबल्य के राजभाषा अधिकारी डॉ. ए.श्रीनिवासन ने "ऐष

द्वारा हिंदी का प्रयोग" पर एक डेमो दिया। कोशल किशोर, अपर महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में दक्षिण रेलवे में राजभाषा हिंदी के कारगर कार्यान्वयन पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि हिंदी में काम करने की जिम्मेदारी सबकी है और इसमें राजभाषा विभाग सभी का सहयोग करता है।



पत्रिका

Date: 24/03/2023, Edition: Chennai, Page: 4
Source : <https://epaper.patrika.com/>

में

तकनीकी संगोष्ठी आयोजित

राजभाषा प्रयोग से मिलने वाली प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी



चेन्नई@पत्रिका. दक्षिण रेलवे मुख्यालय में गौतम दत्त, प्रधान मुख्य इंजीनियर तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी की अध्यक्षता में एचआरएमएस पर एक तकनीकी संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें के. हरिकृष्णन, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस संगोष्ठी के दौरान एम. सेंदिल कुमार, उप मुख्य कार्मिक अधिकारी-औद्योगिक संबंध एवं अन्य दस कार्मिक अधिकारी एवं 80 कर्मचारी उपस्थित रहे।

एचआरएमएस में, कार्यालय आदेश, कार्यालय ज्ञापन जैसे धारा 3(3) के दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में अपलोड करने की तरीका, पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन द्वारा प्रदर्शित किया गया। डॉ.ए. श्रीनिवासन, राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय ने इन दस्तावेजों को द्विभाषी में अपलोड करने के बारे में और राजभाषा के प्रयोग से मिलनेवाली विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी सूचित किया कि दक्षिण रेलवे के इन्ट्रानेट होम पेज में इन दस्तावेजों में प्रयुक्त वाक्यांशों का संकलन दिया गया है जिससे मुख्यालय के साथ-साथ सभी मंडल तथा कर्मशालाओं के कर्मचारी भी लाभान्वित हो सकेंगे। एन. चित्रा, वरिष्ठ अनुवादक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संगोष्ठी समाप्त हुई।

राजभाषा सगाथा : आदर्श म भी हिंदी

चेन्नई (दक्षिण प्रकाश)। दक्षिण रेलवे मुख्यालय में गौतम दत्त, प्रधान मुख्य इंजीनियर तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी की अध्यक्षता में बुधवार को को एचआरएमएस पर एक तकनीकी संगोष्ठी आयोजित की गयी। इसमें के. हरिकृष्णन, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस संगोष्ठी के दौरान, एम. सेंदिल कुमार, उप मुख्य कार्मिक अधिकारी/औद्योगिक संबंध एवं अन्य दस कार्मिक अधिकारी एवं 80 कर्मचारी उपस्थित रहे।

एचआरएमएस में, कार्यालय आदेश, कार्यालय ज्ञापन जैसे धारा 3(3) के दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में अपलोड करने की तरीका, पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन द्वारा प्रदर्शित किया



अधिकारी, प्रधान कार्यालय ने इन दस्तावेजों को द्विभाषी में अपलोड करने के बारे में और राजभाषा के प्रयोग से मिलनेवाली विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी सूचित किया कि दक्षिण रेलवे के इन्ट्रानेट होम पेज में इन

दस्तावेजों में प्रयुक्त वाक्यांशों का संकलन दिया गया है जिससे मुख्यालय के साथ-साथ सभी मंडल तथा कर्मशालाओं के कर्मचारी भी लाभान्वित हो सकेंगे। एन. चित्रा, वरिष्ठ अनुवादक के धन्यवाद समर्पण के साथ संगोष्ठी समाप्त हुई।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
epaper.dakshinbharat.com
24 Mar 2023 - Page 8

क्या खाएं, क्या न खाएं - पुस्तिका का विमोचन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां दक्षिण रेलवे की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी गौतम दत्त ने सभी का स्वागत किया और हिंदी के कार्यान्वयन की आवश्यकता एवं तरीके बताए।

प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी गौतम दत्त ने सभी का स्वागत किया और हिंदी के कार्यान्वयन की आवश्यकता एवं तरीके बताए।

अपर महाप्रबंधक कोशल किशोर ने "स्वास्थ्य" विषय पर बने सहायक साहित्य का विमोचन किया जिसकी पहली प्रति चिकित्सा विभाग के प्रतिनिधि डॉ. यू.के.पेरुमाल, मुख्य स्वास्थ्य निदेशक ने प्राप्त की। इसमें मुर्मू रोगी, उच्च रक्तचाप रोगी, मधुमेह रोगी आदि के आहार नियमों का विवरण है। कोशल किशोर ने बताया कि क्या खाएं, क्या न खाएं पुस्तिका समय की मांग है। मनु शिवशंकर को रेलवे बोर्ड के व्यक्तिगत नकद पुरस्कार प्रमाण-

पत्र देकर सम्मानित किया गया। धारा 3(3) के शत प्रतिशत अनुपालन पर जोर देते हुए मुख्यालय के राजभाषा अधिकारी डॉ. ए.श्रीनिवासन ने ऐप द्वारा हिंदी का प्रयोग पर एक डेमो दिया। कोशल किशोर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में दक्षिण रेलवे में राजभाषा हिंदी के कारगर कार्यान्वयन पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि हिंदी में काम करने की जिम्मेदारी सबकी है और इसमें राजभाषा विभाग सभी का सहयोग करता है।

